संस्कार विवेचन

प्रथम संस्करण-6.7.2015

गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज हरिद्वार
(उत्तराखण्ड) पिन-249411

विषय सूची

क्र.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	संस्कार परम्परा	03
2.	संस्कार क्या है ?	04
3.	*पुंसवन संस्कार*	06
4.	*नामकरण संस्कार*	13
5.	*अन्नप्राशन संस्कार*	21
6.	*मुण्डन संस्कार (चुड़कर्म)*	27
7.	विद्यारम्भ संस्कार	33
8.	यज्ञोपवीत संस्कार दीक्षा संस्कार	39
9.	वानप्रस्थ संस्कार	47
10.	जन्मदिवसोत्सव संस्कार	55
11.	विवाहदिवसोत्सव संस्कार	60
12.	अत्येष्ठि संस्कार, मरणोत्तर संस्कार	67
14.	गायत्री यज्ञ से संबंधित पूजन सामग्री	69

ईमानदार होने का अर्थ है-हजार मनकों में से अलग चमकने वाला हीरा।

संस्कार परम्परा

अनगढ़ आता है इन्सान, संस्कार करते निर्माण।
संस्कार हीन संतान, धरती पर है भार समान॥
संस्कार देवत्व जगाते, संस्कार ही 'देव' बनाते।
व्यक्ति समाज वहाँ सुधरा है, जहाँ संस्कार परम्परा है॥

1. संस्कार परम्परा हमारी महानतम् आध्यात्मिक विरासत, ऋषियों की जीवन-साधना का निचोड़ है।
2. मनुष्य की जीवन-यात्रा में महत्वपूर्ण बिन्दुओं (चौराहों) पर प्रदान किया जाने वाला मार्गदर्शन।
3. ऋषि प्रणीत यज्ञीय-शैली का प्रशिक्षण एवं अभ्यास।
4. मनुष्य को पशु-प्रवृत्तियों की ओर बढ़ने से रोककर उसे महानता की ओर प्रेरित करने का एक आध्यात्मिक प्रयोग।
5. यज्ञाग्नि की साक्षी में वेदमंत्रों के प्रयोग द्वारा वातावरण में दिव्यता का संचार करके व्यक्ति के अंत:करण को प्रभावित करने का विज्ञान-सम्मत प्रयोग।
6. मानसिक चिकित्सा की प्रखर पद्धति। मनुष्य मात्र को जीवन जीने की कला सिखाने वाला एक अद्‌भूत प्रयोग।
7. स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन एवं सभ्य समाज के निर्माण का मूल मंत्र।
8. विकासग्रस्त जीवन का परिष्कार करके उसे सजाने-सँवारने का विवेक-सम्मत प्रयोग।
9. प्रज्ञा अभियान शांतिकुंज द्वारा वर्तमान विनाशकारी परिस्थितियों में सृजन के समर्थक, परिष्कृत व्यक्तित्व के धनी लोकसेवियों का उत्पादन।

संस्कार क्या है?

भूमिका-

गंगा की गोद हिमालय की छाया, परम पूज्य गुरुदेव एवं सप्तऋषियों की तपस्थली में स्थित गायत्रीतीर्थ शांतिकुंज जहाँ 1926 से अखण्ड दीप प्रज्वलित है एवं प्रतिदिन यज्ञ होता है। ऐसे दिव्य वातावरण में आप लोग संस्कार कराने आये हैं यहाँ परम पूज्य गुरुदेव एवं वन्दनीया माताजी के सूक्ष्म संस्कार विद्यमान है।

अलौकिक दिव्य वातावरण में आपका संस्कार प्रारम्भ करने से पूर्व हमें यह समझाना होगा कि संस्कार है क्या? संस्कार एक आध्यात्मिक उपचार है जिससे मनुष्य श्रेष्ठ व संस्कारवान बनता हुआ चला जाता है। संस्कार वह संजीवनी विद्या है, जिसके माध्यम से व्यक्ति को अनगढ़ से सुगढ़, नर स नारायण एवं मानव से महामानव बनाया जाता है। जिस प्रकार कही पर पत्थर पड़ा रहता है, वह पैरों से रौदा जाता है, तो उसका कोई मूल्य नहीं होता, अगर वही पत्थर किसी मूर्तिकार के हाथ लग जाता है, तो वह कटाई-छटाई करके सुन्दर मूर्ति बनाकर किसी मंदिर या देवालय में स्थापित कर देता है, तो वह मूल्यवान बन जाता है। वह उतना ही निखरता हुआ चला जाता है। कहने का तात्पर्य है कि संस्कार के माध्यम से सामान्य मनुष्य को भी श्रेष्ठ व समुन्नत बनाया जा सकता है। अनगढ़ से सुगढ़ में परिष्कृत करने की प्रक्रिया को संस्कार कहा जाता है।

संस्करणं सम्यक् करणं वा संस्कारः।

संस्कार परम्परा हमारी महान आध्यात्मिक विरासत है। इसे जीवन की कला का प्रशिक्षण कहा जा सकता है। हमारे पूर्वज ऋषियों ने जीवन-विद्या पर गहन शोध करके यह तथ्य उजागर किया कि मानव जीवात्मा की विराट यात्रा का एक पड़ाव मात्र है। इसमें अनेक महत्वपूर्ण मोड़ या चौराहे हैं, जिन पर मार्गदर्शन के अभाव में भटकाव की पूरी-पूरी सम्भावना रहती है। ऐसे प्रत्येक मोड़ पर संस्कार के रूप में एक मार्गर्शन का सूचना पट लगाकर ऋषियों ने सुसंस्कृत समाज की सरंचना का सफल प्रयोग किया था।

संस्कारों की संख्या व नाम के सम्बन्ध में आचार्यों में पर्याप्त मतभेद है। गौतम ऋषि ने इनकी संख्या 40 तथा ऋषि अंगिरा ने 25 लिखी है। व्यास, मनु आदि अधिकांश मनीषियों ने 14 की संख्या स्वीकार की है। षोडश संस्कार की मान्यता उसी का परिणाम है। कुछ आचार्यों ने 12 एवं 10 की संख्या भी मानी है। वर्तमान समय में लोगों की मन:स्थिति एवं परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए परम पूज्य गुरुदेव पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने निम्नलिखित 12 संस्कारों को व्यापक अभियान के रूप में सम्पन्न कराये जाने की बात पर जोर दिया। शेष संस्कारों के महत्वपूर्ण कर्मकाण्डों एवं प्रेरणाओं को इन्हीं के साथ जोड़ दिया है। ये हैं-पुंसवन, नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण (मुण्डन), विद्यारम्भ उपनयन (यज्ञोपवीत), विवाह, वानप्रस्थ, अन्येष्टि, मरणोत्तर, जन्मदिवस एवं विवाह-दिवस संस्कार। जन्मदिवस संस्कार एवं विवाह दिवस ये दो संस्कार ऐसे हैं जो व्यक्ति के जीवन में हर वर्ष मनाने का अवसर मिलता है।

यज्ञीय वातावरण में किया गया मार्गदर्शन व्यक्ति की अंत:चेतना को प्रभावित करता है। इस प्रकार व्यक्ति एवं परिवार के प्रशिक्षण का आध्यात्मिक प्रयोग पूर्ण होता है। जिस प्रकार खदान से निकली हुई अनगढ़ व सामान्य ताँबा, लोहा जैसी धातुओं को बड़े कारखाने (स्टील प्लाण्ट) में संस्कारित करके सुघड़ व उपयोगी बनाया जाता है, जिस प्रकार लोहा जैसी सामान्य धातु के टुकड़े को आयुर्वेद के आचार्यों द्वारा गजपुट, ताप, खरल आदि क्रियाओं द्वारा लौह भस्म के रूप में उपयोगी रस-रसायन बना दिया जाता है। उसी प्रकार हमारे ऋषियों ने संस्कार प्रक्रिया के माध्यम से मनुष्य के आत्मिक व भौतिक विकास का मार्ग प्रशस्त करके मानव को महामानव, देवमानव स्तर तक विकसित किया था। इस प्रकार पृथ्वी पर स्वर्ग की संकल्पना को साकार किया था, वर्तमान समय में पुन: वही होने जा रहा है। **संस्कारो हि नाम गुणाधानेन वा दोषपनयनेन वा।** (सा.वा.) संस्कार परम्परा अर्थात् सत्प्रवृत्ति संवर्धन-दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन।

1-पुंसवन संस्कार

गर्भवती का शुद्ध आचार, यह ही है पुंसवन संस्कार।
माता का जैसा हो ध्यान, पैदा हो वैसी संतान॥
संस्कार जो गर्भ में पाता, बालक वे ही लेकर आता।
गर्भस्थ बालक का परिष्कार, करता है पुंसवन संस्कार॥

श्रृंगी ऋषिहि वशिष्ठ बोलावा। पुत्रकाम शुभ जग्य करावा॥
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें। प्रगटे अगिनि चरूकर लीन्हें॥
यह हवि बाँटि देव नृप जाई। जथा जोग जेहि भाग बनाई॥

पुमान सूयते इति पुंसवनम्-पुरूषार्थी संतान की कामना से किया जाने वाल पुंसवन संस्कार (जन्म से पूर्व) प्राग्जन्म संस्कारों (गर्भाधान, सीमान्तोन्नयन) में प्रमुख है। वर्तमान समय की मन:स्थिति एवं परिस्थितियों को देखते हुए पूज्य गुरुदेव ने तीनों संस्कारों की महत्वपूर्ण प्रेरणाओं एवं कर्मकाण्डों को पुंसवन संस्कार के साथ जोड़ दिया है।

गर्भस्य शिशु न केवल माँ के आहार से अपना आहार ग्रहण करता है, बल्कि विचारों एवं भावनाओं को भी माँ के माध्यम से ही प्राप्त करता है। इसीलिए गर्भवती माँ के आहार-विहार तथा आचार-विचार का ही नहीं, अपितु उसके प्रति परिवार जनों के व्यवहार का भी समुचित मार्गदर्शन इस संस्कार के साथ प्रदान किया जाता है। माँ अपने संकल्प के अनुरूप ही बच्चे का निर्माण करती है। पुंसवन संस्कार के माध्यम से इस सामर्थ्य का बोध कराते हुए समाज में नारी के सम्मान जनक रूप को प्रतिष्ठित किया जा रहा है। इस प्रकार '**यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते यत्र देवता:**' की उक्ति पुन: सार्थक सिद्ध होने जा रही है।

गर्भ-निहित शिशु चेतना, का करने संस्कार,
अभिमंत्रित चरू पुंसवन है औषधि उपचार।
शिशु संस्कारित गर्भ में बढ़ता है अविराम,
संस्कारित करना उसे, है घर-भर का काम।

गर्भस्थ शिशु के समुचित विकास के लिए भावी माता का पुंसवन संस्कार किया जाता है। बालक को संस्कारवान बनाने के लिए सर्वप्रथम माता-पिता का भी संस्कारवान होना अति आवश्यक है। पुंसवन दो शब्द से मिलकर

बनता है पु+सवन पु का अर्थ है–जीव और सवन का अर्थ है–धोना या परिष्कार करना। जीवन को संस्कारित करना ही पुंसवन कहलाता है। मनुष्य जन्म चौरासी लाख योनियों में भटकने के पश्चात प्राप्त होता है, इसमें अन्य योनियों के संस्कार जीवन में समाहित रहते हैं। अत: संस्कार के माध्यम से कुसंस्कारों को दूर कर सुसंस्कारों की स्थापना की जाती है। कहा गया है–

शोधन करते जो कलुषों को, संस्कार कहलाते हैं।
इनसे जुड़कर मानव, सहज देव बन जाते हैं॥

पुंसवन संस्कार–भावी माता का पुसंवन संस्कार तीन माह पश्चात कराया जाता है, विलम्ब से भी किया जाये तो दोष नहीं। तीसरे माह से गर्भ में आकार तथा शारीरिक मानसिक विकास होना प्रारम्भ हो जाता है। जिसके साथ माता की आदतों, विचारों गुण कर्म का प्रभाव भी शिशु के ऊपर पड़ता हुआ चला जाता है।

संत सुकरात कहते हैं–शिशु की पढ़ाई माँ के गर्भ से प्रारम्भ होती है। माता के शरीर से शरीर एवं मन से मन और स्वभाव से स्वभाव बनता है। जिस प्रकार अच्छी फसल के लिए अच्छी भूमि और अच्छे बीज की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार शिशु को श्रेष्ठ बनाने के लिए माता–पिता के शरीर, मन और स्वभाव श्रेष्ठ होना बहुत ही जरूरी है। बालक गीली मिट्टी के समान है। हम उसे जैसा बनाना चाहें वैसा बना सकते हैं। जैसे–अभिमन्यु को चक्रव्यूह भेदन की दीक्षा अपनी माता के गर्भ से ही प्राप्त हुई थी। माँ मदालसा बालक के जन्म लेते ही कानों में कहा करती थी–

शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनोऽसि, संसार माया परिवर्जितोऽसि।
संसार स्वप्नं त्यज मोह निद्रा, मदालसा वाक्यमुवाच पुत्रम्।।

हे पुत्र तुम निर्मल हो केवल विचार हो, पाप रहित हो यह संसार तो माया और परिवर्तनशील है मोह में न पड़ो अपने आपको जानो। इस तरह वह जैसा चाहती थी वैसा बना देती थी इसलिए कहा गया है–'**माता निर्माता भवति**' संतान कोई भी उत्पन्न कर सकता है, पशु भी संतान उत्पन्न करते हैं।

लेकिन वह सिर्फ जननी होती है। माता वह होती है जो निर्माण करती है।

जैसे–परम वन्दनीया माताजी ने हम सबका, सुभद्रा ने अभिमन्यु का, सीता ने लव–कुश का और सुजाता ने अष्टावक्र का निर्माण किया, इसी तरह अगर हमें सुसंस्कारी बालक चाहिए तो माता–पिता का सुसंस्कारी होना अति आवश्यक है। **'यदि माता ही है अज्ञान, तो बच्चे कैसे बनें महान।'** यदि माता–पिता अपने जीवन में नियमित उपासना, साधना, आराधना का क्रम बनायें तो अवश्य ही संतान श्रेष्ठ, सद्‌गुणी होगी।

औषधि अवघ्राण

आइये यहाँ से पुंसवन संस्कार प्रारम्भ करते हैं–इसमें पहला क्रम आता है। औषधि अवघ्राण का। इसमें तीन चीजों का मिश्रण है। वट, गिलोय और पीपल।

1. वट–वट विशालता का प्रतीक है। धीरे–धीरे बढ़ना धैर्य का सूचक है और अपने आपको हर दृष्टि से मजबूत बनाता है। आँधी–तूफान में भी अडिग खड़े रहता है। उस पर अनेक पक्षी घोंसला बनाकर रहते हैं। हरेक राहगीर विश्राम करते हैं और अन्य वृक्षों की बजाय इसकी आयु अधिक होती है। आपका बालक भी वट की तरह धैर्यवान दीर्घजीवी परोपकारी दृढ़ निश्चयी हो। इसीलिए औषधि अवघ्राण में वट का प्रयोग किया जाता है।

2. पीपल–पीपल देवयोनि का वृक्ष माना जाता है। सभी देवताओं का इसमें वास होता है। अन्य वृक्ष 12 घंटे हमें ऑक्सीजन देते हैं लेकिन तुलसी और पीपल ऐसे वृक्ष हैं जो 24 घंटे ऑक्सीजन देते हैं। पीपल के समान आपका बालक देवतुल्य और परमार्थी बनें।

3. गिलोय–गिलोय एक बेल है इसकी प्रवृत्ति ऊपर चढ़ने की होती है। यह एक रोगाणु नाशक भी है। जिस प्रकार बेल वृक्ष का सहारा पाकर ऊपर की ओर चढ़ती है उसी प्रकार शिशु भी अच्छे वातावरण का साथ पाकर निरंतर आगे बढ़ता रहे उन्नति करता रहे।

क्रिया भाव–भावी माता दोनों हाथों में औषधि की कटोरी ले लें। यहाँ से सूत्र बोले जा रहे हैं। आप सभी दुहराये।

ॐ दिव्यचेतनां, स्वात्मीयां करोमि। (हम दिव्य चेतना के आत्मसात कर रहे हैं)
ॐ भूयो भूयो विधास्यामि। (यह क्रम आगे भी बनायें रखेंगे)

अब मंत्र के साथ औषधि को सूँघे व भावना करें कि औषधि के दिव्य, गुण श्वाँस के माध्यम से शिशु के अन्दर आ रहे है।

ॐ विश्वानि देवसवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रंतन्नऽआसुव।

गर्भपूजन

गर्भ कोई कौतुक नहीं है। एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। आने वाले शिशु को भगवान् का प्रतिनिधि मानकर इस दिव्यात्मा के लिए घर में साधना, उपासना का क्रम बनाते हुए आध्यात्मिक वातावरण बनाना चाहिए। हमारे घर में दिव्यात्मा का आगमन होने जा रहा है। ऐसा भाव रखते हुए।

क्रिया भावना–सभी परिजन अक्षत–पुष्प लेकर सूत्र दुहराएँ/सूत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

ॐ सुसंस्काराय यत्नं करिष्ये।

(नवागन्तुको को सुसंस्कृत और समुन्नत बनायेंगे)

अब परिजन गायत्री मंत्र बोलते हुए अक्षत–पुष भावी माता को दे दें, भावी माता अक्षत–पुष्प अपने गर्भ से स्पर्श कराएँ और भावना करें कि गर्भस्थ शिशु को सद्भाव और देव अनुग्रह का लाभ देने के लिए पूजन किया जा रहा है, ऐसा भाव रखते हुए अक्षत–पुष्प सामने रखी तश्तरी में चढ़ा दें।

आश्वात्सना

पहला–आश्वासन् भावी माता गर्भस्थ शिशु को देती है कि वह अपना आहार–विहार, चिंतन, मनन सही रखेगी। ईर्ष्या, द्वेष आदि विकारों से बचेगी तथा सदैव अपने आपको प्रसन्न व स्वस्थ रखने का पूरा प्रयास करेगी। शिशु को श्रेष्ठ संस्कारवान् बनाने का पूरा प्रयत्न करेगी।

दूसरा–आश्वासन् भावी माता के पति और घर के अन्य परिजन भावी माता को देते हैं कि वे भी उनके खान–पान का विशेष ध्यान रखेंगे, उसे सदा स्वस्थ प्रसन्न रखते हुए उनकी उचित आकांक्षाओं व इच्छाओं को जानेंगे और

उन्हें पूरा करने का प्रयास करेंगे। घर में कलह-द्वेष और मनोमालिन्य नहीं उभरने देंगे।

सभी माता-पिता ये चाहते हैं कि हमारा बालक श्रेष्ठ और संस्कारवान् बनें उसके लिए अभिभावकों को अपना आचरण-व्यवहार श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करना चाहिए ताकि वैसा ही प्रभाव बच्चे पर पड़े।

क्रिया भावना-भावी माता के पति उनके कंधे पर हाथ रखें और घर से आए हुए परिजन भी उस ओर आश्वासन् की मुद्रा में हाथ उठाएँ। **सूत्र** यहाँ से बोले जा रहे हैं, सभी परिजन सूत्र दुहराएँ। **सूत्र**-

ॐ स्वस्थां प्रसन्नां यत्नं कर्तुं यतिष्ये।

(भावी माता को स्वस्थ प्रसन्न रखने के लिए प्रयत्न करेंगे।)

ॐ मनोमालिन्यं नो जनयिष्यामि।

(परिवार में कलह और मनोमालिन्य न उभरने देंगे।)

ॐ स्वचरणं अनुकरणीयं विधास्यामि।

(अपना आचरण-व्यवहार अनुकरणीय बनायेंगे।)

मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है, कोई भी एक परिजन भावी माता के ऊपर अक्षत-पुष्प की वर्षा करें।

मंत्र-ॐ स्वस्ति॥ ॐ स्वस्ति॥ ॐ स्वस्ति॥

चरु प्रदान

चरु-अर्थात्-खीर। खीर- दूध, चावल, चीनी के मिश्रण से बनी हुई है। दूध, निर्मलता का, चावल-अटूट निष्ठा का, चीनी-मिठास का प्रतिक है। इन तीनों के गुण खीर में समाहित है। यज्ञ से बची हुई खीर भावी माता को सेवन के लिए दी जाती है। यज्ञ से संस्कारित अन्न ही मन में देवत्व के गुणों को लाता है। भोजन प्रभु का प्रसाद बनाकर ही लिया जाना चाहिए। हम घर में जो भोजन बनाते हैं, वह भोजन भी यज्ञीय संस्कार युक्त होना चाहिए। इसके लिए घर में बलिवैश्व की परम्परा डाली जानी चाहिए।

क्रिया भावना-भावी माता खीर की कटोरी अपने दोनों हाथ में पकड़े मंत्र के बाद मस्तक पर लगायें बाद में खीर भावी माता स्वयं अकेले ही ग्रहण

करें। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है। मंत्र-

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु, पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम॥

अब यह खीर भावी माता अपने पास रख लें। आहुतियों के क्रम में खीर की विशेष आहुति समर्पित की जायेगी। इसमें आहुति प्रदान करने के पश्चात यज्ञशाला से बाहर जाने पर भावी माता खीर को ग्रहण कर लें। ध्यान दें, इस खीर को प्रसाद स्वरूप परिवार के अन्य सदस्यों में नहीं बाँटेंगे। यह खीर केवल भावी माता के लिये है।

संकल्प

संकल्प शक्ति की उपलब्धि, कभी न अधूरी रहती है।
चाहे कितना हो दूर लक्ष्य, सहज सफलता मिलती है॥

आपने परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी और 33 कोटि देवी देवताओं के सूक्ष्म संरक्षण में सूत्रों के माध्यम से जो कुछ बातें सुनी-समझी उसे यहाँ तक ही सीमित नहीं रखेंगे। बल्कि अपने जीवन में भी उतारने का प्रयत्न करेंगे। नित्य साधना-उपासना का क्रम बनाते हुए घर में आध्यात्मिक वातावरण बनायेंगे। बलिवैश्व का क्रम नियमित अपनायेंगे। अच्छे-अच्छे सत्-साहित्य का स्वाध्याय करेंगे।

क्रिया भावना- इसी भावना से सभी परिजन अपने हाथ में अक्षत-पुष्प ले लें। संकल्प यहाँ से बोला जा रहा है उसे दोहराते चलें संकल्प पूरा होने पर अक्षत-पुष्प, आपके पास पूजा की थाली रखी होगी उसमें छोड़ देंगे।

संकल्प दोहराने के दरमियान जब गोत्रोत्पन्न कहा जाए, वहाँ पर अपने-अपने गोत्र का नाम लेंगे। जिन्हें अपने गोत्र का नाम मालूम न हो वहाँ परम पूज्य गुरुदेव जी के गोत्र को भी बोल सकते हैं, गुरु के गोत्र को भी अपना ही गोत्र माना जाता है। परम पूज्य गुरुदेव का गोत्र भारद्वाज है।

अब संकल्प बोला जा रहा है उसे दोहराएँ-

अद्य...गोत्रोत्पन्नः.....नामाहं.....पुंसवन संस्कार सिद्धयर्थं देवानां तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणांतर्गते-दिव्यचेतनां स्वात्मीयां करिष्ये, सुसंस्काराय यत्नं करिष्ये, स्वस्थां प्रसन्नां कर्त्तुं यतिष्ये, मनोमालिन्यं नो जनयिष्यामि, स्वाचरणं अनुकरणीयं विधास्यामि, इत्येषां व्रतानां धारणार्थं, संकल्पं अहं करिष्ये।

विशेष आहुति

ॐ धातादधातु दाशुषे, प्राचीं जीवातु मक्षिताम्। वयं देवस्य धीमहि, सुमतिं वाजिनीवतः स्वाहा। इदं धात्रे इदं न मम।

अन्न प्राशन की विशेष आहुति

ॐ देवीं वाचमजनयन्त देवाः, तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना, धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु स्वाहा। इदं वाचे इदं न मम।

ॐॐ ॐ ॐ ॐ

पुंसवन संस्कार से संबंधित पूजन सामाग्री-

1. औषधि अवघ्राण के लिए वट वृक्ष की मुलायम जटाएँ, गिलोय, एवं पीपल के कोमल पत्ते लेकर तीनों को सिल पर पीस कर तरल मिश्रण बनाकर रखें।
2. चावल की खीर, गाय के दूध से बनी हुई।

2-नामकरण संस्कार

नाम रखो! कर सोच विचार, यही है नाम करण संस्कार।
बालक का ऐसा हो नाम, सुनकर भाव जगे अभिराम॥

चौपाई–नामकरण कर अवसरु जानी। भूप बोलि पठए मुनि ज्ञानी॥
करि पूजा भूपति अस भाषा। धरिअ नाम जो मुनि गुनि राखा॥
सो सुख धाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक बिश्रामा॥
विश्व भरण–पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई॥
जाके सुमिरन ते रिपु नासा। नाम शत्रुहन बेद प्रकाशा॥

दोहा– **लच्छण धाम राम प्रिय, सकल जगत आधार॥**
गुरु बशिष्ठ तेहि राखा लछिमन नाम उदार॥

''**पिता मामा च दधतुर्यदग्रे**'' सर्वप्रथम माता पिता द्वारा प्रदान किया गया सम्बोधन–नामकरण।

जन्म के बाद सम्पन्न होने वाले क्रमशः तीन संस्कारों–जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण के महत्वपूर्ण कर्मकाण्डों एवं उनकी प्रेरणाओं का समावेश। शिशु के अंदर मौलिक कल्याणकारी प्रवृत्तियों एवं आकांक्षाओं की स्थापना। कुसंस्कारों के निवारण तथा सुसंस्कारों के विकास की पृष्ठभूमि का निर्माण। अभिभावकों द्वारा शिशु को जन्म देने के साथ उन्हें व्यक्तित्व सम्पन्न बनाने का कर्त्तव्यबोध। **यथा नामे तथा गुणे।** शिशु में नाम के अनुरूप गुणों का विकास की मनौविज्ञानिक प्रक्रिया का शुभारंभ। दिव्य द्रष्टा कुलगुरु व पुरोहित द्वारा शिशु के भविष्य को देखकर भावी गुणों के अनुसार नाम निर्धारण की प्राचीन परम्परा जैसे वशिष्ठ द्वारा राम, भरत, लक्ष्मण आदि का नामकरण। गुण कर्म स्वभाव के नाम परिवर्तन का निर्धारण की सहज सामाजिक परम्परा जैसे सुयोधन का दुर्योधन, रावण अर्थात्–**रावयति भीषयति सर्वान्–इति। चतुर्विधान नामानि धार्याणि।** चार प्रकार के नामों का विधान–देवता के नाम, मासनाम, नक्षत्रनाम, व्यवहार नाम।

नामकरण संस्कार से है शिशु की पहचान।
नाम प्रेरणा दे सके, इसका रखिये ध्यान॥

रहा अजामिल पापमय नारायण था पुत्र।
नाम पुकारा पुत्र का पिता हो गया मुक्त॥

आइये नामकरण संस्कार कराने से पूर्व नामकरण संस्कार का महत्त्व समझें कि नामकरण संस्कार क्या है और क्यों कराना चाहिए?

नामकरण संस्कार शिशु जन्म के बाद पहला संस्कार होता है इस संस्कार के माध्यम से शिशु रूप में अवतरित जीवात्मा को कल्याणकारी यज्ञीय वातावरण का लाभ पहुँचाने का सत्प्रयास किया जाता है क्योंकि यह मानव शरीर 84 लाख योनियों में भटकने के बाद मिला है। उन 84 लाख योनियों में हमारे अंदर कितने कुसंस्कार हो सकते हैं और कितने ही सुसंस्कार भी हो सकते हैं। उन कुसंस्कारों के निवारण के लिए तथा सुसंस्कारों की स्थापना के लिये समय-समय पर सभी संस्कार कराये जाने चाहिए। शिशु कन्या है या पुत्र इस पर कोई भेदभाव नहीं करना चाहिए, क्योंकि शीलवती कन्या को दस पुत्रों के बराबर कहा गया है-''**दस पुत्र समा कन्या, यस्या शीलवती सुता**''
इसके विपरीत पुत्र भी कुल धर्म को नष्ट करने वाला हो सकता है-
''**जिमि कपूत के उपजे, कुल सधर्म नसाहि**''

इसलिए शिशु-पुत्र या कन्या जो भी हो, संस्कार अवश्य कराया जाना चाहिए। नामकरण संस्कार के माध्यम से शिशु को समाज से और समाज को शिशु से परिचय कराया जाता है इसलिए शिशु को एक संबोधन शब्द दिया जाता है। **गोस्वामी तुलसीदास**-जी ने भी नामकरण के संदर्भ में व्याख्या करते हुए कहा है-

रूप विशेष नाम बिनु जाने, करतल गत न परहि पहिचाने।
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी, उभय प्रबोधक चतुर सुभाषी।।

अर्थात्-जगत व्यापार में नाम का अत्यधिक महत्त्व है। यह वाणी, गुण विशिष्ट, मानव की भाषिक संरचना है। मनुष्यों की बात ही क्या, पशु पक्षी भी अपना नाम सुनकर उल्लास, उमंग से भर उठते हैं। नाम की महिमा से अगुन-

अगोचर भी सगुण साकार हो जाता है, इसलिए माता-पिता तथा परिवारी जनों का कर्तव्य बन जाता है कि उसे ऐसा नाम दिया जाय जिससे उसका गुण, विवेक, साहस उच्च स्तर का हो। क्योंकि यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि मनुष्य को जिस तरह के नाम से पुकारा जाता है, उसे उसी प्रकार की अनुभूति होती है। अगर किसी को हम बार-बार बुद्धू, उल्लू कहें तो उसकी अंत: चेतना उसी को सही मानने लगती है और वह वैसा ही बन जाता है।

किसी सज्जन की पाँच लड़की हुई तो उन्होंने अपनी छोटी लड़की का नाम मनहूस रख दिया, क्योंकि लड़कों की चाह में पाँचो लड़कियाँ हुई थीं। लड़की थी बहुत सुंदर, पर नाम था मनहूस। बड़ी होने के बाद नाम का अर्थ समझ में आया, तो उसे बहुत दुख हुआ और इतनी दुखी हो गई कि उसकी मानसिक स्थिति ही बिगड़ गई। कितने ऐसे भी होते हैं, जो हंसी मजाक में ही, लाड़, प्यार में ही अपने बच्चों का नाम रख देते हैं जैसे रिंकी,टिंकी, मुन्ना, बबलू ऐसे नामों का कोई अर्थ नहीं होता है। इसलिए नाम गुण-वाचक, देवी-देवता, महापुरुष या प्राकृतिक विभूतियों के नाम पर ही नाम रखे जाने चाहिए। जैसे- राम का नाम लेते ही हमें उनकी मर्यादा कर्त्तव्य-निष्ठा की याद आती है। भरत का नाम लेते ही उनके भाई के प्रति समर्पण, त्याग की याद आती है। रानी लक्ष्मीबाई का नाम लेते ही उनके शौर्य, पराक्रम की याद आती है।

कहने का तात्पर्य है कि हम शिशु का जो भी नाम रखें उस नाम का गुण, कर्म, विशेषता बताकर उसी अनुरूप जीवन जीने की प्रेरणा देकर, हम बच्चे को जैसा चाहते हैं, उसी अनुरूप बना सकते हैं, ढाल सकते हैं। नाम की विशेषता को उसके जीवन का साँचा बना सकते हैं, और उस साँचे से एक महामानव, देवमानव बना सकते हैं।

यथा नाम तथा गुण होता है। इसलिए शिशु को अच्छा नाम देना चाहिए ताकि जीवन भर उसे भाव ऊर्जा मिलती रहे। आइये इन्ही भावों को और अच्छी तरह समझने का प्रयास करते हुए संस्कार प्रारंभ करते हैं।

मेखला बंधन

मेखला अर्थात–कलावा। कलावा, शिशु की कमर में बांधा जाता है। जिस तरह फौजी जवान पुलिस के सिपाही बेल्ट बांधकर बड़ी स्फूर्ति के साथ अपनी ड्यूटी पूरी करते हैं। यह बेल्ट चुस्ती, मुस्तैदी, निरालस्यता, स्फूर्ति एवं कर्त्तव्य पालन का प्रतीक है। हमारे शिशु में भी चुस्ती,मुस्तैदी, कर्त्तव्य पालन का गुण विकसित हो, ऐसी भावना रखते हुए पिता, हाथ में कलावा लें और सूत्र दोहरायें–**ॐ स्फूर्तं तत्परं करिष्यामि।** (शिशु में स्फूर्ति और तत्परता बढ़ायेंगे।)

मंत्र के साथ कलावा कमर में बाँधें। भावना करें शिशु में तत्परता जागरूकता, संयमशीलता जैसी सत्प्रवृत्तियों की स्थापना की जा रही है। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे, प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे, निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे, वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्। ॐ गणपतये नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।।

मधु प्राशन

मधु अर्थात्–शहद चटाया जाता है, शहद चाँदी की चम्मच से चटाया जाता है चाँदी पवित्रता और निर्विकारिता का प्रतीक है। यदि चाँदी के चम्मच की व्यवस्था न हो पाये तो पिता या परिवार के बड़े सदस्य अपनी उँगली से भी चटा सकते हैं। शहद चटाने का तात्पर्य है कि शिशु मधुरभाषी हो, क्योंकि सज्जनता की पहचान वाणी से ही होती है, शालीनता की परख– मधुर,नम्र–प्रिय, शिष्टता से भरी हुई बोलचाल देखकर ही की जा सकती है। इसी गुण के आधार पर दूसरों से स्नेह और सहयोग प्राप्त होता है। हमारा शिशु भी मधुर भाषी बने इसी भावना से माँ, हाथ में शहद लेकर सूत्र दोहरायें–

ॐ शिष्टतां शालीनतां वर्धयिष्यामि।

(शिशु में शिष्टता–शालीनता की वृद्धि करेंगे।)

मंत्र के साथ पिता अथवा परिवार के बड़े सदस्य, शिशु को शहद चटायें, भावना करें कि शिशु में शुभ, प्रिय, कल्याण प्रद वाणी की स्थापना की जा रही

है। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है–

ॐ मंगलं भगवान विष्णुः, मंगलं गरूडध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्षो, मंगलायतनो हरिः॥

सूर्य नमस्कार

सूर्य प्रखरता, निरन्तरता, गतिशीलता, तेज प्रकाश एवं उष्णता का प्रतीक है उसकी किरणें संसार में जीवन संचार करती हैं। सूर्य अपने कर्त्तव्यों से एक पल के लिए भी विमुख नहीं होता और न जल्दबाजी, उतावली करता है और न थक हारकर अपने कर्मों के प्रति उपेक्षा करता है। ऐसे ही गुण शिशु में भी आएँ, इसी भाव के साथ सूर्य दर्शन कराया जाता है। पिता शिशु को गोद में लेकर सूत्र दोहरायें–

ॐ तेजस्वितां वर्धष्यिामि। (शिशु की तेजस्विता में वृद्धि करेंगे)

पिता शिशु को गोद में लिये सूर्य की तरफ मुख करके खड़े हो जायें। बालक प्रखर बने उसकी तेजस्विता में वृद्धि हो ऐसा भाव रखते हुए सूर्य दर्शन कराएँ, गायत्री मंत्र साथ–साथ बोलते रहें। **ॐ भूर्भुवः स्वः ....।**

भूमि पूजन स्पर्श

इसमें धरती माँ को शिशु के द्वारा प्रथम बार प्रणाम कराया जाता है भूमि को केवल मिट्टी ही न मानकर देवभूमि, मातृभूमि, जन्मभूमि, धरती माता, भारतमाता मानकर उनके प्रति श्रद्धा भक्ति, उनके कर्मों के प्रति कृतज्ञता और उनके रक्षा के प्रति हरपल तैयार रहने की भावना हमारे अंदर भी और हमारे शिशु के अंदर भी विकसित हो, ऐसा भाव रखते हुए माता पिता हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर सूत्र दोहरायें–

ॐ सहिष्णुं कर्तव्यनिष्ठां विधास्यामि।

(शिशु को सहनशील और कर्तव्यनिष्ठ बनायेंगे)

अक्षत–पुष्प धरती माँ पर अर्पित करें, मंत्र के साथ शिशु को पूजित भूमि पर लिटा दें, माता वसुन्धरा से प्रार्थना करें कि उनकी सहनशीलता, कर्त्तव्यनिष्ठा के गुण शिशु में भी आयें। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है–

ॐ मही द्यौः पृथ्वीच नऽ इमं यज्ञं मिमिक्षताम् । पिपृतां नो भरीमभिः ।
ॐ पृथिव्यै नमः ।

नाम घोषणा

आपने अपने शिशु का जो भी नाम रखा है जरूर श्रेष्ठ ही होगा, अपने शिशु के नाम के साथ भावना करेंगे कि घोषित नाम ऐसे व्यक्तित्त्व का प्रतीक बनेगा। जो सबका गौरव बढ़ाने वाला होगा क्योंकि शिशु आपका ही पुत्र या पुत्री नहीं है पूरे समाज पूरे राष्ट्र का है।

शिशु का नाम मंच से बोला जाएगा '**चिरंजीवी हो**' सभी लोग चिरंजीवी हो तीन बार दोहराएँगे–

पुनः शिशु का नाम मंच से बोला जाएगा '**धर्मशील हो**' आप सभी लोग धर्मशील हो तीन बार दोहराएँगे–

पुनः शिशु का नाम बोला जाएगा, '**प्रगतिशील हो**' आप सभी लोग प्रगतिशील हो तीन बार दोहराएँगे।

परस्पर परिवर्तन लोकदर्शन

जिस तरह सभी देव शक्तियों ने मिलकर, अपना एक–एक अस्त्र शस्त्र प्रदान कर, एक शक्ति बनायी थी जिसे हम माँ दुर्गा, माँ वैष्णो कहते हैं, उसी प्रकार सभी परिजनों का स्नेह, दुलार संस्कार पाकर शिशु महामानव, देवमानव बने इसी भाव से परस्पर परिवर्तन किया जाता है। सभी परिजन शिशु को ऐसा ही स्नेह दुलार संस्कार देने का उत्तरदायित्त्व अनुभव करते हुए सूत्र दोहराएँ–

ॐ उपलालनं करिष्यामि। अनुशिष्टं विधास्यामि।

(शिशु को दुलार देंगे, अनुशासन में रखेंगे)

गायत्री मंत्र बोलते हुए माँ शिशु को पिता की गोद में दे, पिता अन्य परिजनों को दें, सभी अपना स्नेह दुलार देते हुए पुनः माँ की गोद में दे दें। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है–

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्।।

बाल प्रबोधन

शिशु के विकास के लिए जितना आवश्यक स्नेह दुलार है उतना ही आवश्यक समय अनुकुल छोटी बड़ी बातों को समझना। शिशु छोटा है उसे बाहरी दुनियाँ का ज्ञान नहीं होता। क्या सही है ? क्या गलत ? इसकी जानकारी शिशु को नहीं होती शिशु बोल नहीं पाता है पर दूसरों की भावनाओं को अच्छी तरह समझता है अनुभव करता है। जैसे–माता मदालसा अपने पुत्रों के जन्म के बाद उनके कान में कहा करती थी–**शुद्धोसि, बुद्धोसि, निरंजनोसि** इस मंत्र के माध्यम से उनके बालक संत स्तर के महान बन गये। हमारे शिशु में भी इन्हीं गुणों का विकास हो। इसी भाव के साथ प्रतिनिधि शिशु के कान में मंत्र बोलें।

1. भो तात! त्वं ईश्वरांशोसि । (हे तात तुम ईश्वर के अंश हो)

2. मनुष्यता तव महती विशिष्टता। (तुम्हारी सबसे बड़ी विशेषता मनुष्यता है)

3. ऋष्यनुशासनं पालयेः। (जीवन भर ऋषि–अनुशासन का पालन करना)

आशीर्वचन

अब सभी परिजन एंव प्रतिनिधि हाथ में अक्षत–पुष्प लें । मंत्र के साथ बच्चों को आशीर्वाद दें। उज्जवल भविष्य की कामना करें। परम पूज्य गुरुदेव, वन्दनीया माताजी का आशीर्वाद बच्चे पर सदैव बरसता रहे। इसी भाव से उन पर पुष्प वर्षा करें।

मंत्र–भो शिशो! त्वं आयुष्मान् वर्चस्वी श्रीमान् भूयाः।
ॐ मंगलं भगवान विष्णुः, मंगलं गरूडध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्षो, मंगलायतनो हरिः॥

संकल्प

आपने नामकरण संस्कार के माध्यम से जो भी श्रेष्ठ बातें सुनी हैं, समझी है, उसे अपने जीवन में उतार सकें, आत्मसात कर सकें, ताकि हम तुच्छ से महान और महान से महानतम तक पहुँच सकें ऐसा भाव रखते हुए हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर संकल्प सूत्र दोहरायें–

अद्य...गोत्रोत्पन्नः.....नामाहं.....नामकरण संस्कार सिद्धयर्थं देवानां तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणांतर्गते-स्फूर्तं तत्परं करिष्यामि, शिष्टतां शालीनतां वर्धयिष्यामि, तेजस्वितां वर्धयिष्यामि, सहिष्णुं कर्त्तव्यनिष्ठां, विधास्यामि, उपलालनं करिष्यामि, अनुशिष्टं विधास्यामि, इत्येषां व्रतानां धारणार्थं, संकल्पं अहं करिष्ये।

नोटः-नामकरण संस्कार हेतु जिन परिजनों ने अपने बच्चों के नाम नहीं रखे हैं उनके माता-पिता का नाम, शिशु बालक है अथवा बालिका-नोट कर ले लें। नाम घोषणा के समय मंच से नाम की घोषणा करें।

ॐॐॐॐॐ

नामकरण संस्कार से संबंधित पूजन सामाग्री-

1. अभिषेक के लिए पल्लाव (आम्रपत्र) युक्त जल कलश।
2. शिशु की कमर में बाँधने के लिए मेखला।
3. मधु प्रशान के लिए शहद।
4. शहद चटाने के लिए चाँदी की चम्मच या अंगूठी आदि।
5. नाम घोषणा के लिए थाली या तख्ती (प्लेट)।
6. विशेष आहुति के लिए मेवा/ मिष्ठान/ खीर से आहुति दें।

3-अन्नप्राशन संस्कार

अन्नप्राशन में खीर चटाते, सात्विक भोजन करो सिखाते।
जैसा हम करते हैं भोजन, वैसा ही हो जाता चिंतन॥

षण्मासं चैनमन्नं प्राशयेल्लघुहितं च। -सुश्रुत

छठे महीने से शिशु को हितकारी और सुपाच्य अन्न देने का विधान। लगभग इसी समय दाँतों का निकलना। ठोस आहार की आवश्यकता का संकेत। **तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः।** जीवन में यज्ञीय अन्न (आहार) ही ग्रहण करने का शास्त्रों में निर्देश। शुभारंभ यज्ञीय वातावरण में अन्नप्राशन संस्कार से। जैसा खाये अन्न वैसा बने मन। आहार से स्थूल शरीर को आवश्यक ऊर्जा के साथ ही मन को विचार भी मिलते हैं। अतः वह पौष्टिक व सुपाच्य होने के साथ-साथ ईमानदारी से परिश्रमपूर्वक अर्जित किया हुआ व सुसंस्कारी भी हो। आहार रसोई बनाने वाले के विचारों एवं भावों से भी प्रभावित। अतः यज्ञीय भाव से भगवान् के लिए नैवेद्य रूप में ही उसका निर्माण हो। मन अर्थात् विचारों से ही जीवन की गतिविधियों का निर्धारण। अन्नप्राशन संस्कार से जीवन निर्माण की दिशा में परिवार के सदस्यों का मार्मिक प्रशिक्षण।

जैसा खाते अन्न हैं, वैसा बनता मन।
सात्विक, पौष्टिक खीर से, होये अन्न प्राशन॥
अन्न-प्राशन संस्कार यह, देता है निर्देश।
अपने श्रम का खाइये अन्न यही संदेश॥

आइये अब अन्नप्राशन संस्कार प्रारम्भ करते हैं-बच्चा 6 महीने तक माँ के दूध पर निर्भर रहता है। ६ माह के पश्चात् दाँत निकलना प्रारंभ हो जाता है। जो इस बात का सूचक है कि शिशु अब कुछ ठोस आहार को पचाने की भी क्षमता रखता है अतः प्रथम बार अन्न जो शिशु को दिया जा रहा है उसे अन्नप्राशन संस्कार के माध्यम से संस्कारित करके ही दिया जाता है।

अन्न का शरीर से गहरा संबंध है, क्योंकि जीवन जीने के लिए वायु, जल, अन्न की आवश्यकता पड़ती है। वायु, जल हमें सरलता से प्राप्त हो जाते

हैं, लेकिन अन्न के लिए हमें परिश्रम करना पड़ता है। अन्न का संबंध मात्र स्वाद से नहीं स्वास्थ्य से है। कहा जाता है–**जैसा खाये अन्न वैसा बने मन**– अर्थात् जैसा हम अन्न ग्रहण करते हैं उसके अनुरूप हमारा मन बनता हुआ चला जाता है यदि हम शुद्ध सात्विक भोजन ग्रहण करते हैं तो हमारे मन में सात्विक विचार आते हैं। लेकिन यदि हम अनीति पूर्वक कमाया हुआ तामसिक भोजन ग्रहण करते हैं तो हमारे मन में वैसे ही कुसंस्कार आते हैं।

कहानी–एक बार महात्मा आनन्द स्वामी के पुत्र रणवीर जो क्रांतिकारी थे उन्हें जेल जाना पड़ा। रात को सोते समय उन्हें तरह–तरह के स्वप्न आते थे। स्वप्न में कभी वह अपने माँ को मार रहे होते, कभी उनके बाल पकड़कर घसीट रहे होते। जबकि वे अपनी माँ को बहुत प्यार करते थे। वे बहुत परेशान रहने लगे। उनके पिता जी जब उनसे मिलने जेल में आये तो उन्होंने अपनी माँ के बारे में पूछा। पिताजी ने कहा तुम्हारी माँ ठीक है, तुम्हें बहुत याद करती है। उन्होंने अपने पिताजी को स्वप्न के बारे में बताया। पिताजी ने पूछताछ किया तो पता चला उस जेल में जो रसोईया भोजन बनाता था। वह मातृ हत्या की सजा में जेल में बंद था और जब वह भोजन बनाता था तो उसके मन में वैसे ही विचार आते रहते थे। जिसका प्रभाव भोजन पर भी पड़ा। जिससे भोजन ग्रहण करने वाले भी प्रभावित हुए।

इसलिए भोजन पकाते समय हमें मानसिक रूप से गायत्री मंत्र बोलते हुए ही भोजन बनाना चाहिए। भोजन किस तरह पकाया गया है। किस मनोभूमि के व्यक्ति ने भोजन बनाया है और कैसे वातावरण में भोजन बना है, इसका पूरा पूरा प्रभाव हमारे मन पर पड़ता है। क्योंकि– सात्विक भोजन ही आयु, बल, आरोग्य, सुख–शांति की वृद्धि करने वाला होता है। राजसिक भोजन चाहे वह अधिक स्वादिष्ट तथा चटपटेदार क्यों न हो प्रारंभ में अच्छे भले ही लगते हों, पर वे अंत में नाना प्रकार के रोग, दुःख और चिन्ता उत्पन्न करने वाले ही सिद्ध होते हैं, सात्विक भोजन से आध्यात्मिक भावों की वृद्धि होती है।

अन्न का जीवन में अत्यधिक महत्त्व है जो हमारे स्वास्थ्य और सात्विक

मन का निर्माण करता है। उस अन्न को आज बच्चा अपने जीवन में पहली बार ग्रहण करने जा रहा है। उसे हम संस्कार के माध्यम से प्रारंभ करते हैं।

पात्र पूजन

पात्र–पूजन का–और पात्र–पात्रता का प्रतीक है। ईश्वरीय अनुदान या लौकिक सफलता प्राप्ति के लिए पात्रता की आवश्यकता पड़ती है। यदि हमारा पात्र पवित्र नहीं है। तो हम उसमें कीमती खाद्य पदार्थ नहीं रख सकते। संस्कारित आहार कुसंस्कारित पात्र में नहीं रखा जा सकता है, अन्यथा वह खाने योग्य नहीं रहेगा।

एक बार भगवान बुद्ध एक व्यक्ति को गुरुदीक्षा देने के लिए उसके घर जाते हैं। उनके हाथ में कमण्डल था। दीक्षा देने से पहले उन्होंने उस व्यक्ति से अपने कमण्डल में खीर डालने के लिए कहा। वह व्यक्ति अंदर से खीर से भरा पात्र लाया और भगवान बुद्ध के कमण्डल में डालने लगा। उसने देखा कि कमण्डल के अंदर गोबर भरा है। वह बोला मैं अपनी काजू, किसमिस, बादाम से बनी खीर इस गंदे पात्र में नहीं डाल सकता। तब भगवान बुद्ध कहते हैं कि तुम्हारे शरीर रूपी पात्र के अंदर जो लोभ, मोह, अहंकार, तृष्णा का जो ढेर भरा है, उसे पहले साफ करो तब मैं तुम्हें ज्ञानरूपी अमृत–दीक्षा दूँगा।

कहने का तात्पर्य है कि हमें अपनी पात्रता विकसित करने के लिए अपने जीवन में उपासना, साधना और आराधना का क्रम बनाना चाहिए। तभी हमारी पात्रता विकसित होगी और दैवी अनुग्रह प्राप्त होगा।

इसी भाव का संदेश यह पात्र पूजन देता है। संस्कारित अन्न को रखने से पहले पात्र को भी संस्कारित किया जाता है।

क्रिया पक्ष–माता–पिता हाथ में रोली लेकर सूत्र दुहरायें, सूत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

सूत्र–ॐ सुपात्रताम् प्रदास्यामि। (शिशु में सुपात्रता का विकास करेंगे।)

क्रिया–मंत्र के साथ अभिभावक पात्र पर रोली से स्वस्तिक बनाएँ साथ ही अक्षत पुष्प चढ़ायें। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

मंत्र- ॐ स्वस्ति न ऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः, स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः, स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु॥

अन्न संस्कारः

बच्चे को पेय पदार्थ से अन्न पर लाने के लिए खीर दी जाती है। यह पेय और खाद्य के बीच की अवस्था है, अर्थात हमें बच्चे की आयु, उसकी पाचन क्षमता तथा आवश्यकता को ध्यान में रखकर ही उसके आहार का चयन करना चाहिए।

खीर के साथ मधु, घी, तुलसीदल और गंगाजल मिलाते हैं। ये सभी सात्विक, पौष्टिक, रोगनाशक तथा पवित्र हैं। बच्चे के लिए खीर सुपाच्य, सन्तुलित आहार है।

मधु-मधुरता का प्रतीक है। बच्चे का आचरण व्यवहार और वाणी में मधुरता आए।

घी-स्नेह का प्रतीक है। बच्चा सभी का स्नेह दुलार पाता हुआ आगे बढ़े।

तुलसी-विकार नाशक है। बच्चों के सभी रोग दूर हों और उसमें आध्यात्मिक भावों का विकास हो।

गंगाजल-पवित्रता का प्रतीक है। बच्चा भी पवित्र और निर्मल हृदय वाला बनें।

ये सभी वस्तुएँ अन्न को संस्कारित करने के लिए मिलाई जाती हैं।

क्रिया-माता-पिता खीर के पात्र को हाथ में लेकर सूत्र दुहरायें। सूत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

ॐ कुसंस्काराः दूरी भूयासुः। (अन्न के पूर्व कुसंस्कारों का निवारण करते हैं)

क्रिया पक्ष -प्रतिनिधि खीर के पात्र में जल के छींटें लगायें। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

मंत्र- ॐ मंगलम् भगवान् विष्णुः मंगलम् गरूडध्वजः।
मंगलम् पुण्डरीकाक्षो, मंगलायतनो हरिः ॥

क्रिया-पुनः प्रतिनिधि खीर के पात्र में जल के छींटे लगाएँ। सूत्र यहाँ से बोला जा रहा है सभी दुहराएँ-

ॐ सुसंस्काराः स्थिरी भूयासुः।

(इसमें सात्विक, सुसंस्कारों की स्थापना करते हैं।)

अन्नप्राशन

दिव्य वातावरण की ऊर्जा से प्रभावित अन्न को अब बच्चों को खिलायेंगे। जो दिव्य ऊर्जा से अमृत तुल्य बन गया है। इससे बच्चों के गुण, कर्म, स्वभाव, चिंतन, चरित्र तथा व्यवहार पर प्रभाव पड़ेगा तथा मन में देवत्व के संस्कार जागृत होंगे। हमें प्रतिदिन यज्ञ देव को भोग लगाकर भोजन ग्रहण करना चाहिए।

भावपूर्वक भगवान को भोग लगाकर ग्रहण किया गया अन्न वास्तव में संस्कारित हो जाता है। भावना में भगवान का वास होता है। जिससे विष भी अमृत में बदल जाता है। इसका उदाहरण मीरा है।

मीरा को विष का प्याला दिया गया था, तो मीरा ने उसे भगवान श्री कृष्ण को अर्पण करके प्रसाद स्वरूप बना लिया और विष अमृत में बदल गया।

उसी प्रकार हमें भी अपने घर में अन्न को संस्कारित करके खाना और खिलाना चाहिए। इसके लिए घर में प्रतिदिन बलिवैश्व की परम्परा डालनी चाहिए।

अर्थात् जब आप भोजन बना लेते हैं तो रोटी या चावल में गुड और घी मिलाकर चूल्हे या गैस पर कटोरी रखें और गायत्री मंत्र बोलते हुए आहुति समर्पित करें। बचे हुए अन्न को पूरे भोजन में मिला दें, जिससे भोजन प्रसाद स्वरूप हो जाएगा और जो भी इस भोजन को ग्रहण करेगा। उसमें निश्चित ही श्रेष्ठ विचारों का बीजारोपण होगा। ईमानदारी, नीतिपूर्वक कमाया हुआ धन समाज के लिए अंशदान के रूप में बच्चों के हाथों से निकालें इससे बच्चों में देने की या मिल बाँटकर खाने की प्रवृत्ति जागृत होगी। घर-परिवार में नियमित रूप से उपासना, साधना और आराधना का क्रम भी बनायें।

क्रिया-माता-पिता खीर चम्मच में ले लें। यहाँ से गायत्री मंत्र बोला जा रहा है। साथ में गायत्री मंत्र बोलते हुए बच्चे को खीर चटायें।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

संकल्प

हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर संकल्प लें। संकल्प का कोई विकल्प नहीं होता। संकल्प में हजार हाथियों का बल होता है ऐसा शास्त्रों में कहा गया है। प्रजापति ब्रह्मा ने संकल्प किया तो सृष्टि की उत्पत्ति हुई। परम पूज्य गुरुदेव ने युग निर्माण का संकल्प लिया है। हम सब उनके मानस पुत्र हैं। उस संकल्प को पूरा करने हेतु हमें सच्चे दूत की भूमिका निभानी ही होगी।

आज आप लोग भी इस पवित्र वातावरण में संकल्प लें कि शिशु को सात्विक, पौष्टिक आहार देंगे। ईमानदारी की कमाई से प्राप्त अन्न का सेवन करेंगे। और बलि वैश्व के रूप में भगवान को भोग लगाकर भोजन को नित्य प्रसाद मानकर ग्रहण करेंगे। संकल्प सूत्र यहाँ से बोला जा रहा है सभी दुहराएँ।

अद्य...गोत्रोत्पन्नः.....नामाहं.....अन्नप्राशन संस्कार सिद्धयर्थं देवानां तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणांतर्गते-सुपात्रतां प्रदास्यामि, कुसंस्कारान् दूरीकरिस्यामि सुसंस्कारान् स्थिरीकरष्यिामि इत्येषां व्रतानां धारणार्थं, संकल्पं अहं करिष्ये।

ॐॐ ॐ ॐ ॐ

अन्नप्राशन संस्कार से संबंधित पूजन सामाग्री-

1. अन्नप्राशन के लिए चांदी का पात्र।
2. चावल या सूजी की खीर।
3. शहद
4. घी (गाय का)
5. तुलसीदल
6. गंगाजल

4-मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार

मुण्डन गर्भ-विकार निकाले, सद्चिंतन की शक्ति उभारे।
परिष्कार शिशु के चिंतन का, है उद्देश्य यही मुण्डन का॥

चौपाई-कछुक काल बीतें सब भाई। बड़े भये परिजन सुखदाई॥
चूड़ाकरन कीन्ह गुरु जाई। बिप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई॥

चूड़ाकर्म द्विजातीनां सर्वेषामेव धर्मतः-मुण्डन सभी द्विजातियों के लिए आवश्यक धर्म कृत्य। गर्भ से आने वाले बालों को प्रथम बार यज्ञीय वातावरण में साफ करने की क्रिया। जीवात्मा के साथ जन्म-जन्मान्तरों से चली आने वाली हीन-पशु प्रवृत्तियों का निवारण। मानवीय गौरव-गरिमा के अनुरूप देव वृत्तियों के बीजारोपण। प्रतीक शिखा की स्थापना। इस कार्य में दिव्य चेतन धाराओं का भी सहयोग मिले। अतः देवस्थलों पर ही यह संस्कार कराने की परम्परा। बालक के मस्तिष्कीय (बौद्धिक) विकास एवं सुरक्षा के संबंध में अभिभावकों का मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण। कर्मकाण्ड के अंतर्गत दुग्ध-दधि से मस्तक लेपनअर्थात्-अवाँछनीयताओं के निवारण में स्नेह। त्रिशिखा बंधन अर्थात् मस्तिष्क की सृजन, पोषण, परिवर्तन रूपी तीनों शक्ति धाराओं की आवश्यकता का नियंत्रण। उपनयन, सन्यास, मरणोत्तर आदि संस्कारों, तीर्थयात्रा एवं अन्य अवसरों पर कराये जाने वाले मुण्डन का तात्पर्य-जीवन क्रम के प्रचलित ढर्रे को बदल डालने का वैज्ञानिक एवं मनौविज्ञानिक प्रयोग।

बालक के मस्तिष्क का हो बहुमुखी विकास।
है मुण्डन, संस्कार के द्वारा यही प्रयास॥
उन्मूलन दुष्वृत्ति का है मुण्डन की सिद्धि।
और शिखा-स्थापना सद्वृत्ति समृद्धि॥

मान्यता है कि जीवात्मा अपने साथ जन्म-जन्मांतरों के सुसंस्कार एवं कुसंस्कार दोनों को ही लेकर आती है। बालक जब एक वर्ष का हो जाता है तब मुण्डन संस्कार कराने का विधान है। प्रायः एक से तीन वर्ष तक की आयु में मुण्डन संस्कार करा लिया जाता है। मुण्डन संस्कार के माध्यम से बालक के मस्तिष्क पर छाये कुसंस्कारों को हटाने का विधान है। यह पूर्ण रूप से एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है।

डाक्टरों का भी मानना है कि माता के गर्भ से आये बाल हानिकारक होते हैं। अतः उन्हें एक बार हटाना आवश्यक होता है। बालक छोटी आयु में ही बहुत कुछ

सीख लेता है। गुण, कर्म, स्वभाव का तीन चौथाई निर्माण छोटी सी आयु में ही हो जाता है। इसलिये संस्कारों के माध्यम से माता-पिता को समय-समय पर इस बात का ध्यान दिलाया जाता है। मुण्डन संस्कार का उद्देश्य है कि बालक के शारीरिक विकास के साथ-साथ उसके मस्तिष्क के, बुद्धि के विकास की ओर भी विशेष ध्यान देंगे। उसके कुसंस्कारों को दूर करने एवं श्रेष्ठ संस्कारों की स्थापना पर पूरा-पूरा ध्यान देंगे। हमारे लंबे-चौड़े शरीर पर मस्तिष्क होता तो छोटा सा है। परन्तु यह पूरे शरीर का नियंत्रक होता है। इतना ही नहीं हमारा पूरा जीवन भी इसी पर निर्भर करता है। यदि हमारे विचार श्रेष्ठ होंगे तो हमारा जीवन भी श्रेष्ठ होगा। अत: बालक को श्रेष्ठ, सदगुणी, विचारशील, विवेकवान बनाने के लिये भी माता-पिता को पूरा-पूरा प्रयास करते रहना चाहिये, ताकि वह बड़ा होकर हमारा व हमारे परिवार का गौरव बन सके।

आज के वैज्ञानिक युग में बालकों के बौद्धिक विकास के लिये कई प्रकार के खेल, योगाभ्यास इत्यादि विकसित हो गए हैं। हम बालक के बौद्धिक विकास के लिये उन्हें भी अपना सकते हैं। साथ ही वर्तमान समय में बच्चे पहले की अपेक्षा अधिक चंचल एवं जिज्ञासु हैं। ऐसे में माता-पिता को चाहिये कि बच्चों की जिज्ञासाओं को स्नेह पूर्वक शांत करें। उन्हें डाँट कर चुप करा देने से बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ता है, उनकी प्रतिभा का पूरा-पूरा विकास नहीं होता और वह कुण्ठित भी हो सकते हैं। इस प्रकार बहुत सी ऐसी बातें हैं, जिनका हमें बच्चों के पालन-पोषण में विशेष ध्यान रखना चाहिये। इसकी विस्तृत जानकारी प्राप्त करने हेतु पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित वाङमय हमारी भावी पीढ़ी और उसका नव-निर्माण, बालकों का भावनात्मक विकास और पविार निर्माण संबंधी पुस्तकों का अध्ययन कर सकते हैं, ताकि बच्चों के व्यक्तित्व का समुचित विकास कर सकें। यह सब शिक्षण एवं मार्गदर्शन देना ही संस्कार का उद्देश्य है परंतु साथ ही यह ध्यान देना भी आवश्यक है कि केवल संस्कार करा लेना ही पर्याप्त नहीं है, उसकी प्रेरणाओं को जीवन व्यवहार में उतारना भी जरूरी है। आईए अब यहाँ से मुण्डन संस्कार प्रारंभ करते हैं।

मस्तक लेपन

इसमें सबसे पहला क्रम है-मस्तक लेपन का। बालक के मस्तक को दूध-दही-जल के मिश्रण से गीला किया जाता है। जहाँ गोरस बालक के मस्तिष्क को ठण्डक और स्निगधता प्रदान करता है वहीं इसके पीछे भाव यह भी है कि बालक में

सहृदयता, भावुकता, सरसता, करुणा, मैत्री, प्रेम एवं उदारता जैसे गुणों का विकास हो। इसके लिये अभिभावकों को ही विशेष ध्यान देना पड़ता है। बालक में दूध जैसी सात्विक वृत्तियों और जल जैसी निर्मलता एवं मिलन सारिता के गुणों का विकास करेंगे! दही से भाव है कि, यह गुण उसके मन-मस्तिष्क में अमिट रूप से जम जाएँ। इन्हीं भावनाओं के साथ दूध, दही, जल का पात्र हाथ में लें और सूत्र दुहराएँ-

ॐ हीनसंस्कारान् निवारयिष्यामि।

(बच्चे के हीन संस्कारों का निवारण करेंगे।)

अब मंत्र के साथ बालक के बालों को गीला करें मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु, पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।

त्रिशिखा बंधन

बालक के मस्तिष्क का सर्वांगीण विकास करेंगे। इस भाव से बालक के मस्तिष्क पर तीन शिखाएँ बाँधी जाती हैं। दाएँ मस्तिष्क को ब्रह्मा मस्तिष्क कहा जाता है। वैज्ञानिक इसे (हैपी हैमिस्फेयर) कहते हैं। इसमें रचनात्मक गुणों एवं आध्यात्मिक भावों का विकास होता है।

बाएँ मस्तिष्क को विष्णु मस्तिष्क कहा जाता है। इसमें पोषण की सहज प्रवृत्तियों का विकास होता है। वैज्ञानिक इसे (सैड हेमीस्फेयर)कहते हैं। उनके अनुसार बायें मस्तिष्क में निराशा, चिंता, भय जैसे आवेग रहते हैं। इसमें संतुलन बनाए रखने हेतु विष्णु ग्रंथि बाँधी जाती है।

सिर के बीचों-बीच के भाग को रुद्र मस्तिष्क कहा जाता है जो दायें और बायें मस्तक में संतुलन बिठाने का कार्य करता है। बालक की सर्वतोमुखी प्रतिभा का विकास करेंगे साथ ही उसमें विवेकशीलता व अच्छे-बुरे का भेद करने की क्षमता का भी संवर्धन करेंगे इस भाव के साथ माता-पिता हाथ में कलावा लें और सूत्र दोहराएँ-

ॐ बहुमुखं विकासं करिष्ये।

(शरीर के साथ मस्तिष्क के बहुमुखी विकास की व्यवस्था बनायेंगे।)

अब कलावा लेकर पहले सिर के दायीं ओर के बालों में शिखा बाँधेंगे। भावना करेंगे कि बालक में आध्यात्मिकता का विकास करेंगे। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

क- ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्, विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। स बुध्न्या उपमाऽ अस्य विष्ठाः। सतच्श्र योनिमसतच्श्र विवः।

अब बालक के सिर के बायीं ओर के बालों में शिखा बाँधें, भावना करें कि बालक में कर्तव्य पालन, न्यायप्रियता और जिम्मेदारी, जैसे गुणों का विकास करेंगे। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है-

ख- ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे, त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ष्ठसूरे स्वाहा।

अब बालक के सिर के बीचों-बीच शिखा बाँधें भावना करें कि बालक में सद्प्रवृत्तियों का विकास करेंगे, दुष्प्रवृत्तियों को दूर करेंगे। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है-

ग- ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ उतो तऽ इषवे नमः बाहुभ्यामुत ते नमः।

छुरा पूजन

अगला क्रम छुरा पूजन का है। छुरा दुष्प्रवृत्तियों, कुसंस्कारों को दूर करने वाले पैने विचारों का प्रतीक है। बालक श्रेष्ठ, सद्गुणी, सदाचारी बने इसके लिए यदि आवश्यकता पड़ने पर क्रोध करना, अथवा बालक को दण्ड भी देना पड़े तो एक आँख दुलार की व एक आँख सुधार की रीति अपनाते हुए उसे कुसंस्कारों से बचाए रखेंगे इसी भाव से हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर छुरे का पूजन करें। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

ॐ गंधाक्षतं, पुष्पाणि, धूपं दीपं नैवेद्यं समर्पयामि।

त्रिशिखाकर्त्तन

बालक के कुसंस्कारों को दूर करते रहेंगे इसी भाव से माता-पिता कैंची हाथ में लेकर सूत्र दोहराएँ-

ॐ दुप्रवृत्तीः उच्छेत्स्यामि। (स्वभावजन्य दुष्प्रवृत्तियों का उच्छेदन करते रहेंगे।)

अब गायत्री मंत्र बोलते हुए पहले दायीं, फिर बाईं और अंत में बीच की शिखा के बालों को काटें। माता बालों को अपने आँचल में समेट लें। संस्कार पूर्ण होने पर बालों को गंगाजी में विसर्जित कर दें, अथवा भूमि में दबा दें। पिता अथवा प्रतिनिधि गायत्री मंत्र बोलते हुए बारी-बारी से बाँधी गई शिखाओं को काटें।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

नवीन वस्त्र पूजन

माता-पिता बालक को पहनाने के लिए नवीन वस्त्र लाए हैं तो उनका पुष्प-अक्षत से पूजन करेंगे। भाव करें कि जिस प्रकार नवीन वस्त्रों में बालक सुंदर दिखाई देता हैं, उसी प्रकार उसका स्वभाव, उसका व्यक्तित्व भी श्रेष्ठ बनाएँगे। उसे संस्कृति निष्ठ, राष्ट्रभक्त और श्रेष्ठ नागरिक बनाएँगे। अक्षत-पुष्प हाथ में ले लें और सूत्र दोहराएँ-

ॐ संस्कृतिनिष्ठं विधास्यामि। (बच्चे को संस्कृति के प्रति निष्ठावान बनायेंगे।)

अब अक्षत-पुष्प से नवीन वस्त्रों का पूजन करें। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

ॐ मंगलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुडध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्षो, मंगलायतनो हरिः।।

मुण्डन कृत्य

माता-पिता बालक को यज्ञशाला से बाहर ले जायें। यज्ञ मण्डप में क्षौर कर्म नहीं होता, इसलिए उसे बाहर ले जाए। समीप ही किसी स्थान पर बैठकर मुण्डन की क्रिया सम्पन करें। मुण्डन करते समय अभिभावक तथा अन्य उपस्थित व्यक्ति मन ही मन गायत्री मंत्र का जप करते रहें और भावना करें उनके द्वारा किया गया यह जप बालक के मस्तिष्क में सद्बुद्धि का प्रकाश बनकर प्रवेश कर रहा है। माता-पिता बालों को आटे या गोबर के गोले में बन्द करके जमीन में गाड़ दें। मुण्डन के पश्चात बच्चे को स्नान आदि करायें।

माता-पिता मानसिक रूप से गायत्री मंत्र का जप करते हुए भावना करें कि गर्भ से आये बालों को हटाने के साथ दिव्य सत्ता के प्रभाव से सारी मानसिक दुर्बलताएँ हट रही हैं। इस प्रक्रिया में सहायक हर शक्ति और हर व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता के भाव रखे जाएँ। भगवान से प्रार्थना करें कि इस संस्कार से प्राप्त दिशा धारा के निर्वाह की क्षमता प्रदान करें।

ॐ येन पूषा बृहस्पतेः वायोरिन्द्रस्य चापवत्। तेन ते वपामि ब्रह्मणा, जीवातवे जीवनाय, दीर्घायुष्ट्वाय वर्चसे।

(यहाँ यज्ञ-दीप की प्रक्रिया जोड़ें)

स्वस्तिक लेखन

प्रतिनिधि रोली या चन्दन अनामिका अँगुली में लेकर सुत्र दोहरवायें।

ॐ विचारान् संयन्तुं प्रेरष्यिामि। (बच्चे को विचार संयम के लिए प्रेरित करते रहेंगे।) तदुपरान्त यह मंत्र बोलते हुए बच्चे के सिर पर केन्द्र में स्वस्तिक अंकित कर दें।

ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः, स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः, स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।

संकल्प एवं पूर्णाहुति

घर के प्रमुख परिजन हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर संकल्प करेंगे। जो प्रेरणाएँ आपको यहाँ से दी गई हैं उनका पालन हम घर जाकर भी करेंगे, इसी भाव से संकल्प सूत्र दोहराएँ।

अद्य...गोत्रोत्पन्नः.....नामाहं.....चूड़ाकरण संस्कार सिद्धयर्थं देवानां तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणांतर्गते-हीनसंस्कारान् निवारयिष्यामि, संस्कृतिनिष्ठां विधास्यामि विचारान् संयन्तुं प्रेरयिष्यामि इत्येषां व्रतानां धारणार्थं, संकल्पं अहं करिष्ये।

अब बालक को यज्ञशाला से बाहर ले जायें। निश्चित स्थान पर मुण्डन करा लें। मुण्डन कराते समय गायत्री महामंत्र का उच्चारण करते रहें। तत्पश्चात् बालक को नहला-धुलाकर नवीन वस्त्र पहनाकर यज्ञशाला में लाएँ और स्वयं सेवक परिजनों द्वारा बालक के सिर पर घी का लेपन करा कर स्वास्तिक लेखन करा लें।

ॐॐ ॐ ॐ ॐ

मुण्डन संस्कार से संबंधित पूजन सामाग्री-

1. मस्तक लेपन के लिए गाय का दूध एवं दही।
2. त्रिशिखा बंधन के लिए कलावे के तीन टुकड़े।
3. कैंची एवं छुरा पूजन हेतु पहले से रखे जाएँ।
4. मुण्डन के बाद शिशु को पहनाने हेतु नये वस्त्र।
5. बाल एकत्रित करने के लिए गुँधा आटा।

5-विद्यारंभ संस्कार

विद्यारंभ संस्कार कराओ, विद्या की महिमा समझाओ।
शिक्षा केवल ज्ञान बढ़ाती, विद्या जीवन-कला सिखाती॥

चौपाई-गुरु गृह गये पढ़न रघुराई। अल्प काल विद्या सब आई।

बालकों में शिष्टाचार-

चौपाई-प्रातकाल उठि के रघुनाथा। मातु पिता गुरु नावहिं माथा॥
अस कहि रथ रघुनाथ चलावा। विप्र चरण पंकज सिरनावा॥
सीय राम मय सब जगजानी। करहुँ प्रणाम जोरि जुगपानी॥

प्राप्तेऽथ पंचमे वर्षे विद्यारंभ तु कारयेत्-बालक का विधारंभ संस्कार पाँचवें वर्ष। अक्षर से अक्षर ब्रह्म की ओर जीवन यात्रा का शुभारंभ।

दिव्य बौद्धिक क्षमताओं के जागरण एवं विकास का क्रम प्रारंभ। शिक्षा-सांसारिक जानकारी का जीवन निर्मात्री (अध्यात्म) विद्या के रूप में विकास हो, इस हेतु भावनात्मक पृष्ठभूमि का निर्माण। विद्या ही जीवन के चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की सिद्धि का मूल आधार। **विद्ययाऽमृतश्नुते।** विद्या ही अमरता का साधन व मुक्ति का द्वार। गणेश एवं सरस्वती का पूजन अर्थात् विवेक बुद्धि के साथ कला-संवेदना के विकास की आवश्यकता। उपकरण (लेखनी, दवात और पुस्तिका) पूजन का अर्थ-इनकी अधिष्ठात्री शक्तियों (धृति, पुष्टि और तुष्टि) के रूप में अभिरुचि, एकाग्रता एवं श्रमशीलता जैसे गुणों का आवाहन-स्थापना। गुरु-शिष्य के मध्य श्रद्धा एवं वात्सल्य जैसे दिव्य भावों के विकास की कामना से गुरु पूजन। जीवन विकास के क्रम में बालक के प्रति माता-पिता के उत्तरदायित्वों का शिक्षण।

माता शत्रुः पिता वैरी, येन बालो न पाठिताः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा॥

केवल शिक्षा ही नहीं, विद्या है अनिवार्य।
शिक्षा से विद्या बिना सधते कब सत्कार्य॥
विद्यारंभ संस्कार से जमें ज्ञान के बीज।
सद्गुरु से दीक्षा मिले, श्रेष्ठ बने जा चीज॥

विद्यारम्भ संस्कार जब बच्चा तीन साल को हो जाता है और स्कूल जाना

प्रारम्भ करता है, तब उसका विद्यारम्भ कराया जाता है। विद्यारम्भ संस्कार में माता-पिता यह संकल्प लेते हैं कि शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध करेंगे। उसे शिक्षार्थी नहीं विद्यार्थी बनायेंगे। बालक में शिक्षा के साथ-साथ विद्या का समावेश करेंगे। शिक्षा और विद्या में अंतर क्या है ? शिक्षा हमें किताबी ज्ञान देती है, भौतिक उन्नति करने का माध्यम बनाती है जिसके माध्यम से हम आर्थिक उपार्जन कर सकते हैं शिक्षा से सुख सुविधा तो मिल जाती है सफलता भी प्राप्त हो जाती है लेकिन आज हम बच्चों को कितनी सुख सुविधायें देते हैं। अच्छे से अच्छे स्कूल कॉलेजों में शिक्षा देते हैं लेकिन क्या कारण है इतनी शिक्षा देने के बाद भी हमारे बच्चों में व्यावहारिक ज्ञान नहीं है। इसका मात्र एक ही कारण है विद्या का अभाव।

आज हम बच्चों को पढ़ा-लिखाकर डाक्टर, इंजिनियर बना देते हैं लेकिन उसे इंसान नहीं बना पाते, इंसान में इंसानियत मानव में मानवता, मनुष्य में मनुष्यता का विकास करने के लिए विद्या का होना उतना ही आवश्यक है जितना की शिक्षा। जिसके बिना हर उपलब्धियाँ व्यर्थ है, विद्या एक प्रकार का साधना है जो अंत: क्षेत्र का प्रचण्ड पुरूषार्थ है। शिक्षा विज्ञान है तो विद्या ज्ञान हैं, शिक्षा सावित्री है तो विद्या गायत्री हैं। एक-दूसरे के बिना बच्चे का जीवन अधूरा है।

कहानी-ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जब छोटे थे तब पिता का देहावसान (मृत्यु) हो जाने के कारण आर्थिक अभाव में रह रहें थे उनकी माता बड़ी दु:खी रहती थी कि बच्चे का पालन-पोषण ठीक तरह से नहीं कर पा रहे थे। बच्चे ने अपनी माँ की वेदना को समझकर एक बार उनसे बोला माँ मैं बड़ा आदमी बनूँगा बहुत बड़ा अधिकारी बनूँगा। और आपको बहुत सुख पहुँचाऊँगा माँ बोली बेटा तुम बड़े आदमी तो बनना पर महान भी बनना। वह कैसे माँ बोली बेटा तुम्हारे एक माँ नहीं हजारों माँ बहनों की स्थिति सुधारना है, क्योंकि उस समय महिलाओं की स्थिति अच्छी नहीं थी। वे दास्ता की बेड़ियों में जकड़ी थी। शिक्षा का अभाव था कष्ट कठिनाईयों से भरा जीवन जी रही थीं। बच्चे ने माँ की यह बात गाँठ बाँध ली। बड़ा होकर प्रोफेसर बना, कुछ धन जीविक उपार्जन में लगाकर पूरा जीवन नारी उत्थान के कार्य में लगा दिया। सच्चे अर्थों में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर विद्या के सागर थे। हमारे बच्चों में सद्गुणों का विकास हो प्रगति के पथ पर आगे बढ़े।

गणेश पूजन

इसमें गणेश जी का पूजन करते हैं। गणेश जी विवेक के देवता हैं। प्रत्येक शुभ कार्य में सर्व प्रथम गणेश जी का पूजन किया जाता है। विवेक का अर्थ है विद्या। विद्या का विकास होता है, सद्गुण व सद्भाव शिशु में आये। बच्चे में बराबर विवेकशीलता बनी रहे। गणेश जी की प्रतिमा आपने देखी ही होगी अगर बालक को हमें विकासशील बनाना है तो उन्हीं के अनुरूप बनने की प्रेरणा बालक को देनी होगी। गणेश जी की लम्बी सूड़ होती है हमारे बच्चे भी समाज में ईमानदार बने और ऐसा काम न करें कि माता-पिता को समाज के सामने लज्जित होना पड़े । सूप के समान कान होते हैं, सूप का गुण है अच्छाई को धारण करना और बुराईयों को फेंक देना यह गुण हमारे बालक में भी आये। गणेश जी का बड़ा पेट होता है। इसका अर्थ है गणेश जी ज्यादा लड्डू खाते हैं इसलिए बड़ा नहीं ? बल्की गणेश जी सबकी अच्छी बुरी बातों को हजम करने की शक्ति रखते हैं। हमारे बालक भी अच्छी-बुरी बातों को पचा सकें।

निर्देश-बच्चे के हाथ में अक्षत-पुष्प दे दें मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है। इसे दोहराएँ-

ॐ विद्यां संवर्धयिष्यामि।

(बच्चे में शिक्षा के साथ-साथ विद्या का भी विकास करेंगे।)

क्रियापक्ष-आइये अब मंत्र के साथ अक्षत-पुष्प पूजा वेदी या खाली तश्तरी पर चढ़ा दें।

ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे, प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे, निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे, वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्। ॐ गणपतये नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।।

सरस्वती पूजना

माँ सरस्वती को शिक्षा का प्रतीक माना गया है। माँ का स्नेह प्यार जिस प्रकार पुत्र के लिए आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार विद्या की देवी माँ सरस्वती का प्यार दुलार बालक को मिलता रहे। माँ सरस्वती कला और भाव संवेदनाओं की देवी है। हमारे बालक में भी अनेक प्रकार की कलाएँ छिपी होती है। हमें उस कला तक पहुँचाने और बालक को उसी ओर बढ़ने का प्रयास करते रहें। बालक के अंदर संवेदनशीलता बढ़ाना चाहिए ताकि उसके अंदर दूसरों का दुःख देखकर उसे दूर करने की प्रेरणा उसके मन में उठे।

कहानी-जिस प्रकार कालीदास महामूर्ख थे लेकिन जब उनका विवाह

विद्योतमा नामक विदुषी के साथ हुआ तब कालीदास विद्योतमा तक नहीं कह पा रहे थे। तब विद्योतमा ने कहा पहले माँ सरस्वती के शरण में जाओ और ज्ञान प्राप्त करके मेरे पास आना। फिर कालीदास माँ सरस्वती के शरण में गये और माँ सरस्वती की कृपा ऐसी बरसी की वे महाकवि कालीदास बन गये। आइये माँ सरस्वती का अनुदान वरदान हमारे बच्चे पर बना रहें।

निर्देश–अभिभावक हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें।

ॐ कलां संवेदनशीलतां वर्धयिष्यामि।

(बच्चे में कलात्मक और संवदेनशीलता का विकास करेंगे)

क्रियापक्ष–अब मंत्र के साथ अक्षत–पुष्प को चढ़ा दें।

ॐ पावका नः सरस्वती, वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धिया वसुः।

उपकरण पूजन

उपकरण पूजन में शिक्षा प्राप्त करने वाले उपकरणों का पूजन किया जाता है। प्राचीन समय से ही कलम, दवात, पट्टी का पूजन किया जाता था। आज हम पेन, कापी, किताब का पूजन करेंगे। क्योंकि तीनों की अधिष्ठात्री देवी धृति, पुष्टि और तृष्टि हैं।

कलम–धृति–धृति का अर्थ है अभिरूचि हम अपने बालक में पढ़ाई के प्रति रूचि जागृत करेंगे। इसके लिए घर में श्रेष्ठ कहानियों की किताब हम अपने बच्चों को सुनायें ताकि बच्चे के मन में रूचि जागृत हो।

दवात्–पुष्टि–पुष्टि का अर्थ है–एकाग्रता बच्चे में एकाग्रता का विकास हो। इधर–उधर भागने वाला डावा–डोल मन वाला व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिए बालक को बचपन से ही एकाग्रता का महत्व समझायें।

पट्टी–तुष्टि–तुष्टि का अर्थ है श्रमशील। अध्ययन के लिए श्रम भी उतना ही आवश्यक है जितनी एकाग्रता और अभिरूचि है। साधन कितना भी प्रखर क्यों न हो उसका लाभ तभी मिल सकता है जब बालक श्रम करेंगे। हर विद्यार्थी को परिश्रमी होना जरूरी है साथ ही वह अपने शिक्षा प्राप्त करने वाले उपकरणों को व्यवस्थित रखेंगे उनके प्रति श्रद्धा का भाव रखेंगे कापी किताब को फाड़–फूड़ नहीं करेंगे, पेन को मुँह में न डालें। अध्ययन के पूर्व नमन–वन्दन करें।

क्रियापक्ष–बालक तथा माता–पिता हाथ में अक्षत–पुष्प ले मंत्र यहां से बोला जा रहा है।

ॐ विद्यासंसाधनमहत्वं स्वीकरिष्ये।

(विद्या विकास के साधनों की गरिमा का अनुभव करते रहेंगे)
अब मंत्र के साथ-अक्षत पुष्प कापी पर चढ़ा दें।
ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्स्य, बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं, यज्ञ ꣳ समिमं दधातु।
विश्वे देवास ऽइह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ।

गुरु पूजन

गुरु व्यक्ति नहीं शक्ति होता है। गुरु जीवन जीने का मार्ग दिखाते हैं। जिस प्रकार गाय अपने बछड़े को दूध पिलाती है उसी प्रकार गुरु अपने शिष्य को विद्यारूपी अमृत पिलाते हैं। माता-पिता को यह चाहिए कि बालक के मन में अपने शिक्षकों एवं गुरुजनों के प्रति आदर का भाव विकसित करें। अपने से बड़ों का आदर करना सिखाएँ।

कहानी-एकलव्य गुरु द्रोणाचार्य के पास शिक्षा ग्रहण करने के लिए गए परन्तु क्षत्रिय न होने के कारण उन्होंने एकलव्य को शिक्षा देने से मना कर दिया। फिर एकलव्य ने गुरु द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति बनाई और उसी मूर्ति को गुरु मानकर उसी के आगे धनुर्विद्या का अभ्यास किया। परिणाम यह रहा कि वह अर्जुन से भी श्रेष्ठ धनुर्धर बन गये। ठीक उसी प्रकार हमारे बालक भी गुरु के कृपा का पात्र बनें।
क्रियापक्ष-माता-पिता व बच्चे के हाथ में अक्षत-पुष्प ले लें तथा मंत्र दुहरायें।
ॐ आचार्यनिष्ठां वर्धयिष्यामि।
(शिक्षकों-गुरुजनों के प्रति निष्ठा को सतत बढ़ाते रहेंगे)
अब मंत्र के साथ अक्षत-पुष्प गुरु के चित्र में चढ़ायें।
ॐ अज्ञानतिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः।।

अक्षर लेखन

आज हम बालकों को सर्वप्रथम गायत्री मंत्र लिखाने जा रहे हैं। उसमें आध्यात्मिक गुणों का विकास निरन्तर होता रहे। वह जीवन में श्रेष्ठ बनता हुआ आगे बढ़े। ॐ परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ नाम है। भूः-का तात्पर्य मन से, भुवः-संयम से और स्वः-का विवेक से है। अर्थात्-बालक शिक्षा प्राप्त तो करें लेकिन यह भी याद रखें कि प्राप्त शिक्षा को वह अच्छे कार्यों में नियोजित करें। पढ़ने के पहले यह पंच अक्षरी

गायत्री मंत्र इसलिए लिखाये जाते हैं कि बालक परमात्मा को अपनी मनोभूमि में सबसे ऊपर स्थान दे। जब भी पढ़ने बैठे सबसे पहले गायत्री मंत्र का उच्चारण करें।

क्रियापक्ष–माता–पिता बालक के हाथ में पेन पकड़ा कर पहले मंत्र दोहरायें।

ॐ नीतिनिष्ठां वर्धयिष्यामि।

(बच्चे में नीति के प्रति निष्ठा की वृद्धि करते रहेंगे)

आइये अब गायत्री मत्र यहाँ से बोला जा रहा है बच्चे का हाथ पकड़ कर पंच अक्षरी गायत्री मंत्र लिखायें।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः. तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्।।

अब अक्षत–पुष्प कापी पर चढ़ा दें।

संकल्प

हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर संकल्प लें। संकल्प का कोई विकल्प नहीं होता। संकल्प में हजार हाथियों का बल होता है ऐसा शास्त्रों में कहा गया है। प्रजापति ब्रह्मा ने संकल्प किया तो सृष्टि की उत्पत्ति हुई।

अद्य...गोत्रोत्पन्नः.....नामाहं.....विद्यारम्भ संस्कार सिद्धयर्थं देवानां तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणांतर्गते-विद्यां संवर्धयिष्यामि, कलात्मकतां संवेदनशीलतां वर्धयिष्यामि, विद्यासंसाधनमहत्त्वं स्वीकरिष्ये, आचार्यनिष्ठां वर्धयिष्यामि, नीतिनिष्ठां वर्धयिष्यामि, इत्येषां व्रतानां धारणार्थं, संकल्पं अहं करिष्ये।

ॐॐॐॐॐ

विद्यारभ संस्कार से संबंधित पूजन सामाग्री-

1. पूजन के लिए गणेश जी एवं सरस्वती माता की प्रतिमा।
2. पट्टी, दवात, लेखनी/ स्लेट, खड़िया/ चौक आदि।
3. कापी, पेन, पेन्सिल।
4. गुरु पूजन के प्रतीक रूप में नारियल रखें।

6-यज्ञोपवीत संस्कार-दीक्षा संस्कार

चौपाई-गुरु गृह गये पढ़न रघुराई। अल्प काल विद्या सब आई।

बालकों में शिष्टाचार-

चौपाई-प्रातकाल उठि के रघुनाथा। मातु पिता गुरु नावहिं माथा॥

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा। विप्र चरण पंकज सिरनावा॥

सीय राम मय सब जगजानी। करउ प्रणाम जोरि जुगपानी॥

मातुरग्रेऽधिजननंद्वितीयं मोञ्झिबंधनम्-एक जन्म माता के गर्भ से और दूसरा जन्म यज्ञोपवीत धारण से। **'जन्मनाजायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते'** यज्ञोपवीत-द्विजत्व का प्रतीक। उपनयन, व्रतबंधन, मौञ्जी बंधन आदि रूपों में प्रचलित संस्कार-यज्ञोपवीत। सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर जीवन में आमूलचूल परिवर्तन के संकल्प का प्रतीक। मानवीय गरिमा के अनुरूप आदर्शवादी परमार्थ परायण जीवन जीने का संकल्प समारोह। यज्ञोपवीत एक सूत्र। सूत्र अर्थात्-सूत का बना नौ धागों का एक प्रतीक। यज्ञ अथवा गायत्री की मूर्तिमान प्रतिमा। सूत्र अर्थात्-फार्मूला-नौ गुणों से समन्वित जीवन जीने का ऋषि प्रणीत फार्मूला। ये गुण हैं-1. समझदारी, 2. ईमानदारी, 3. जिम्मेदारी, 4 बहादुरी, 5. श्रमशीलता, 6. मितव्ययिता, 7. शिष्टता, 8. सुव्यवस्था, 9. सहकारिता। व्रतशीलता ब्रह्मनिष्ठ जीवन जीने वाले लोकसेवियों के प्रभाव से ही भारत भूमि को **'स्वर्गादपि गरीयसी'** देवभूमि तथा भारती संस्कृति को विश्व संस्कृति-देवसंस्कृति का गौरव प्राप्त। देवसंस्कृति दिग्विजय अभियान अर्थात्-गौरवशाली अतीत की पुनरावृत्ति।

यज्ञोपवीत संस्कार है दायित्वों का ज्ञान।
ब्रह्मा विष्णु महेशवत् जन-जन का कल्याण॥
सविता की तेजस्विता, सद्गुरु की तप-सिद्धि।
पाकर हम करते रहें, श्रेष्ठ गुणों में वृद्धि॥

सद्गुरु से दीक्षा यहि पाओ, जीवन सुधरे, भव तर जाओ।
गुरु का रंग तभी चढ़ता है, शिष्य 'समर्पण' जब करता है॥

चौपाई-भए कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता।

देव एक गुन धनुष हमारे, नवगुन परम पुनीत तुम्हारे॥

दीयते ज्ञानमत्यन्तं, क्षीयते पापसञ्चयः।
तस्मात् दीक्षेति सा प्रोक्ता, मुनिभिस्तत्त्व दर्शिभिः

संचित पापों का नाश करके ज्ञान का अनुदान प्रदान करने वाली प्रक्रिया का नाम दीक्षा है। जीवन विद्या के क्षेत्रों में दक्षता प्राप्त करने के उद्देश्य से मार्गदर्शक की नियुक्ति दीक्षा संस्कार। मात्र सामान्य कर्मकाण्ड नहीं, एक आध्यात्मिक प्रयोग। गुरु के प्राण, तप, पुण्य एवं ज्ञान के अंश की शिष्य के जीवन में स्थापना। गुरु रूपी समर्थ सत्ता के प्रति शिष्य का सर्वतोभावेन समर्पण। शिष्य रूपी सामान्य पौधे के साथ गुरु रूपी विशेष पौधे की कलम बाँधना। गुरु से प्राप्त अनुदानों को धारण करने एवं पचाने की क्षमता अर्थात् पात्रता। पात्रता के विकास हेतु गुरु दक्षिणा का विधान। दक्षिणा का निर्धारण गुरु शिष्य की योग्यता एवं दक्षता के अनुरूप। परम पूज्य गुरुदेव व माता जी द्वारा निर्धारित गुरु दक्षिणा के 5 अनुशासन–1. गायत्री महामंत्र की नियमित उपासना, 2. पूज्य गुरुदेव द्वारा लिखित युग साहित्य व अखण्ड ज्योति या अन्य सहयोगी पत्रिकाओं का नित्य स्वाध्याय, 3. जीवन के दोष दुर्गुणों का क्रमशः संकल्प पूर्वक छोड़ने का प्रयास, 4. सत्प्रवृत्ति संवर्धन–दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन के निमित्त समयदान, 5. इस अभियान को गति देने के लिए अपने साधनों को नियोजन–अंशदान।

गुरु के सत्संकल्प की पूर्ति हेतु शिष्य का पुरुषार्थ नियोजित हो तभी दीक्षा की सार्थकता।

दीक्षा लेता शिष्य जब गुरु देता अनुदान।
संचित पाप विनष्ट कर भर देता निज ज्ञान॥
अपने तप के अंश से गुरु सींचे निज शिष्य।
प्राण पिलाकर मातृवत् निर्मित करे भविष्य॥

नवधा भक्ति चौपाई–

नवधा भगित कहऊ तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं॥
प्रथम भगति संतन्ह की सगा। दूसरि गति मम कथा प्रसंगा॥

दोहा– गुरुपद पंकज सेवा, तीसरी भगति अमान॥
चौथी भगति मम गुन गन, करई कपट तज गान॥
मंत्र जाप मम दृढ़ बिश्वासा। पंचम भजन सो बेद प्रकाशा॥
छठ दम सील विरति बहु करमा। निरत निरंतर सज्जन धरमा॥

सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मोते संत अधिक करि लेखा॥
आठवँ जथा लाभ सन्तोषा। सपनेहुँ नहिं देखइ पर दोषा॥
नवम सरल सब सन छल हीना। मम भरोस हिय हरष न दीना॥
नव महुं एकउ जिन्ह के होई। नारि पुरुष सचराचर कोई॥
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरे॥
जोगि बृंद दुरलभ गति जोई। तो कहुं आजु सुलभ भई सोई॥

मेखला कोपीन धारण

मेखला कोपीन धारण करने का प्रयोजन ब्रह्मचर्य पालन और प्रत्येक कार्य में जागरूक, निरालस्य एवं कर्त्तव्य पालन में कटिबद्ध रहने की प्रेरणा देना है। कोपीन पहनना अर्थात्–लँगोट बाँधना। ब्रह्मचारी भी पहलवान की तरह लँगोट बाँधते हैं। लँगोट बाँधना ब्रह्मचर्य पालन का प्रतीक है। किशोरों को यही रीति–नीति अपनानी चाहिए, उन्हें ध्यान रखना चाहिए कि शारीरिक बढ़ोतरी की उम्र में आवश्यक शक्ति का उपयोग शरीर एवं मन को विकसित होने में लगाना चाहिए। यदि उस अवधि में उसे नष्ट किया गया, तो शरीर और मन दोनों का ही विकास रूक जायेगा।

कलावा या कोपीन दोनों हाथों के सम्पुट में रखकर निम्नांकित सूत्र दोहराकर अभिमंत्रित करें। भावना करें कि इनमें समय और तत्परता के संस्कार पैदा किये जा रहे हैं।

ॐ संयमशीलः तत्परश्च भविष्यामि।

(संयमशील और तत्पर रहेंगे)

अब गायत्री मंत्र बोलते हुए उसे कमर में बाँधें।

दण्ड धारण

आश्रमवासी ब्रह्मचारियों को दण्ड धारण कराया जाता है। उसके साथ अनेक स्थूल प्रेरणाएँ जुड़ी हैं। दैनिक उपयोग में कुत्ते, साँप, बिच्छू आदि से रक्षा, पानी की थाह लेना, आक्रमणकारियों से आत्मरक्षा।

अन्याय सहना अन्याय करने के समान ही पाप है। अन्याय करने वाला मरने के बाद नरक में जाता है और अन्याय सहने वाला इसी जन्म में हानि, अपमान, असुविधा, आघात आदि के कष्ट सहता है। इसलिए हर धर्मप्रेमी को अनीति का प्रबल विरोध करने के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए। इस तत्परता का एक प्रतीक उपकरण

लाठी है।

सूत्र दोहराकर दण्ड मस्तक से लगाकर अपनी दाहिनी ओर रख लें।

ॐ अनुशासनानि पालयिष्यामि।

(गुरु द्वारा निर्धारित अनुशासनों का पालन करेंगे।)

यज्ञोपवीत पूजन

यज्ञोपवीत देव प्रतिमा है। उसकी स्थापना के पूर्व उसकी शुद्धि तथा उसमें प्राण-प्रतिष्ठा का उपक्रम किया जाता है। जनेऊ को सबसे प्रथम पवित्र करना चाहिए। उसे शुद्ध जल से और यदि सम्भव हो सके तो गंगाजल से धोना चाहिए।

दोनों हाथों के सम्पुट में यज्ञोपवीत को लेकर पाँच बार गायत्री मंत्र बोलते हुए उसमें गायत्री की प्राण-प्रतिष्ठा करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

पञ्च देवावाहन

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, यज्ञ और सूर्य-इन पाँचों देवताओं को पाँच दिव्य भावनाओं का प्रतीक माना गया है। ब्रह्मा अर्थात्-आत्मबल, विष्णु-समृद्धि, महेश-व्यवस्था, यज्ञ-परमार्थ, सूर्य-पराक्रम इन पाँचों गुणों को देवता मानकर हम यज्ञोपवीत के माध्यम से अपने हृदय और कलेजे पर धारण करें। अर्थात्-उन्हें अपनी आस्था एवं प्रकृति का अंग बनाएँ तभी वास्तविक कल्याण का मार्ग मिलेगा। देवता भावनाओं के प्रतिबिम्ब होते हैं।

निम्नांकित सूत्र दोहराकर क्रमशः ब्रह्मा, विषणु, महेश, यज्ञ और सूर्य देवता का यज्ञोपवीत में आवाहन करें। हर बार नमः के साथ यज्ञोपवीत को हाथ के सम्पुट सहित मस्तक से लगा लिया करें।

1. ब्रह्मा हमें सृजनशीलता प्रदान करें

ॐ ब्रह्मा सृजनशीलतां ददातु। ॐ ब्रह्मणे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

2. विष्णु हमें पोषण-क्षमता से युक्त बनावें।

ॐ विष्णुः पोषणक्षमतां ददातु। ॐ विष्णवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि,

ध्यायामि।

3. शिव हमें अमरत्व प्रदान करें।

ॐ शिवः अमरतां ददातु। ॐ शिवाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

4. यज्ञदेव हमें सत्कर्म सिखायें।

ॐ यज्ञदेवः सत्पथे नियोजयेत्। ॐ यज्ञपुरुषाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

5. सविता हमें तेजस्वी बनायें।

ॐ सवितादेवता तेजस्वितां वर्धयेत्। ॐ सवित्रे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

यज्ञोपवीत धारण

कोई भी वस्त्र, आभूषण हो, अपनी शोभा प्रतिष्ठा तब बढ़ाता है, जब उसे धारण किया जाए। यज्ञोपवीत प्रतीक को धारण करते हुए यह ध्यान रखा जाए कि यह सूत्र नहीं, इस माध्यम से जीवन में दिव्यता-आदर्शवादिता को धारण किया जा रहा है। इसे सहज ही धारण किया जाना चाहिए, क्योंकि इसके बिना मनुष्य में मनुष्यता का विकास सम्भव नहीं।

यज्ञोपवीत धारण करने के पूर्व सूत्र दोहरायें-

ॐ गायत्रीरूपं धारयामि।

(हम इस यज्ञोपवीत को गायत्री प्रतिमा के रूप में धारण कर रहे हैं)

ॐ यज्ञप्रतीकरूपं धारयामि।

(हम इसे यज्ञ के प्रतीक रूप में धारण कर रहें हैं)

ॐ गुरोः अनुशासनरूपं धारयामि।

(हम इसे गुरु के अनुशासन के रूप में धारण कर रहे हैं)

मंत्रोच्चार के साथ यज्ञोपवीत धारण करें।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

गुरु पूजन

जिस प्रकार भगवान मूर्ति नहीं एक चेतना है, उसी प्रकार गुरु को व्यक्ति नहीं चेतना रूप मानना चाहिए। जो ईश्वर को मूर्तियों, चित्रों तक सीमित मानता है, वह ईश्वरीय सत्ता का समुचित लाभ नहीं उठा सकता। इसी प्रकार जो गुरु को शरीर तक सीमित मानता है, वह गुरु सत्ता का लाभ नहीं उठा सकता। जिस प्रकार ईश्वर सर्वसमर्थ है, पर भक्त की मान्यता और भावना के अनुरूप ही प्रत्यक्ष फल देता है। वैसे ही गुरु भी शिष्य की आस्था के अनुरूप फलित होता।

हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दोहराते हुए गुरु चेतना का आवाहन करें।

ॐ परमात्मचेतनां गुरुरूपेण वृणे।

(परमात्म चेतना को हम गुरु रूप में वरण करते हैं।)

ॐ अखण्डमण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः।। १।।
नमोऽस्तु गुरवे तस्मै, गायत्री रूपिणे सदा।
यस्य वागमृतं हन्ति, विषं संसारसंज्ञकम्।। २।।
मातृवत् लालयित्री च, पितृवत् मार्गदर्शिका।
नमोऽस्तु गुरुसत्तायै, श्रद्धाप्रज्ञायुता च या।। ३।।

मंत्र दीक्षा

गायत्री मंत्र सहज रूप से एक छन्द है, प्रार्थना है। गुरु जब उसके साथ अपने तप, पुण्य और प्राण जोड़ देता है, तो वह मंत्र बन जाता है।

अब सभी साधक सावधान होकर बैठें। कमर सीधी, हाथ की अँगुलियाँ परस्पर फँसाकर हाथ के अँगुठों को सीधा रखते हुए परस्पर मिलाएँ। अँगुठे के नाखूनों पर साधक अपनी दृष्टि टिकाएँ। यह स्थिति मंत्र दीक्षा चलने तक बनी रहे। कहीं इधर-उधर न देखें। मंत्र दीक्षा के बाद जब सिञ्चन हो जाए तब दृष्टि हटाएँ और हाथ खोलें।

हाथ जोड़कर सूत्र दोहराते हुए उसके अनुरूप भावनाएँ बनाएँ। इसके बाद गायत्री मंत्र का एक-एक अक्षर तीन बार दुहरायें।

सिंचन अभिषेक

कुछ स्वयं सेवक भाई अथवा बहन कलश का जल लेकर खड़े हो जाएँ। मंत्रोच्चार के साथ कलश का जल दीक्षित होने वाले परिजनों के ऊपर जल का अभिसिंचन करें।

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवः, तानऽऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।।१।।
ॐ यो वः शिवतमो रसः, तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।। २।।
ॐ तस्माऽअरं गमाम वो, यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपोजन यथा च नः।। ३।।

व्रतधारण

सूर्य उपस्थान की तरह हाथ उठाकर पाँच देवताओं की साक्षी में व्रत धारण का संकल्प लिया जाता है। नमः के साथ दोनों हाथ जोड़ते हुए मस्तक से लगा लें।

ॐ अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ अग्नये नमः।
ॐ सूर्य व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ सूर्याय नमः।
ॐ चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ चन्द्राय नमः।
ॐ वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ वायवे नमः।
ॐ व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ इन्द्राय नमः।

गुरु दक्षिणा संकल्प

हाथ में पुनः अक्षत-पुष्प जल लेकर सूत्रानुसार भाव भूमिका बनायें। तत्पश्चात् संस्कृत शब्दावली का संकल्प दुहरायें-

1. हम गुरु अनुशासन में नियमिम उपासना करेंगें।
2. हम गुरु का मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए नियमित स्वाध्याय एवं सत्संग करेंगे।
3. हम गुरु ऋण एवं देव ऋण से उऋण होने के लिए नियमित आराधना के निमित्त समय और साधनों का एक अंश लगायेंगे।

ॐ अद्य .....नामहं.....श्रुति स्मृति पुराणोक्त-फलप्राप्त्यर्थं मम कायिक-वाचिक मानसिक ज्ञाताज्ञात-सकलदोष निवारणार्थं दीक्षितो भवामि। तन्निमित्तकं युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ परमपूज्य गुरुदेव पं.श्री राम शर्मा आचार्येण, वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मणा च निर्धारितानि अनुशासनानि स्वीकृत्य, तयोः प्राण-तपः-पुण्यांशं स्वान्तः करणे दधामि, तत्साधयितुं च

समय-प्रतिभा-साधनानां एकांशं .....नवनिर्माणकार्येषु प्रयोक्तुं गुरुदक्षिणायाः संकल्पं अहं करिष्ये।

संकल्प के बाद हाथ के अक्षत-पुष्प को पूज्य गुरुदेव के चित्र के समक्ष अर्पित कर दें।

नमस्कार

हाथ जोड़कर देव मंच तथा समस्त देवशक्तियों को नमस्कार करें।

ॐ नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये, सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटी युगधारिणे नमः।।

ॐॐॐॐॐ

यज्ञोपवीत एवं दीक्षा संस्कार-

1. कमर में बाँधने के लिए मेखला (कलावा)
2. कोपीन/ लंगोटी/ दण्ड धारण करने के लिए लाठी या ब्रह्मदण्ड।
3. यज्ञोपवीत पीले रंगे हुए।
4. पहनने के लिए नये वस्त्र।
5. गुरु पूजन के लिए मशाल या नारियल रखें।
6. वेद पूजन के लिए वेद या कोई युग साहित्य रखें।
7. गायत्री, सावित्री एवं सरस्वती के लिए पूजा की चौकी पर तीन ढेरी अक्षत (चावल) की रखें।

वानप्रस्थ संस्कार

सन्त कहहिं असि नीति दसानन। चौथे पन जाइहिं नृप कानन॥
बर बस राज सुतहि नृप दीन्हा। नारि समेत गवन वन कीन्हा॥

वाने वनसमूहे प्रतिष्ठिते इति वानप्रस्थः-गृहस्थ जीवन के दायित्व पूर्ण करके वन की ओर प्रस्थान। सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वाह का संकल्प। समाज ऋण से मुक्ति का प्रयास। मोह-ममता को परिवार की ओर से शिथिल कर समाज की ओर उसका विकास। युवावस्था के कुसंस्कारों का शमन-प्रायश्चित। भारतीय धर्म-संस्कृति का प्राण। जनमानस का परिष्कार कर लोक कल्याणकारी प्रवृत्तियों के संचालन का दायित्व वहन। विश्व मानवता के कल्याण की योजनाओं का निर्धारण एवं संचालन। इसी आधार पर भारत को देवभूमि व विश्वगुरु का सम्मान तथा भारतीय को विश्व संस्कृति की मान्यता। वानप्रस्थ परम्परा का नवीन संस्करण, देवस्कृति दिग्विजय अभियान के सृजन सेनानी।

सद्गृहस्थ व्रत पूर्ण कर, पारिवारिक दायित्व।
वानप्रस्थ संस्कार का, भूलें नहीं महत्व॥
ज्येष्ठ पुत्र को सौंपकर अपने सारे भार।
जनसेवी जीवन जियें, ब्राह्मण-सा आचार॥

ढलती उम्र का परम पवित्र कर्त्तव्य है-वानप्रस्थ। पारिवारिक जिम्मेदारियाँ जैसे ही हलकी होने लगें, घर को चलाने के लिए बड़े बच्चे समर्थ होनें लगे और छोटे भाई-बहिनों की देखभाल करने लगें, तब वयोवृद्ध आदमियों का एक मात्र कर्त्तव्य यही रह जाता है कि वे पारिवारिक जिम्मेदारियों से धीरे-धीरे हाथ खींचे और क्रमशः वह भार समर्थ लड़कों के कन्धों पर बढ़ाते चलें। ममता को परिवार की ओर से शिथिल कर समाज की ओर विकसित करते चलें। सारा समय घर के ही लोगों के लिए खर्च न कर दें, वरन् उसका कुछ अंश क्रमशः अधिक बढ़ाते हुए समाज के लिए समर्पित करते चलें।

धर्म और संस्कृति का प्राण-वानप्रस्थ संस्कार भारतीय धर्म और संस्कृति का प्राण है। जीवन को ठीक तरह जीने की समस्या उसी से हल हो जाती है। युवावस्था के कुसंस्कारों का शमन एवं प्रायश्चित इसी साधना द्वारा होता है। जिस देश, धर्म, जाति तथा समाज में उत्पन्न हुए हैं, उनकी सेवा करने का, ऋण मुक्त होने

का अवसर भी इसी स्थिति में मिलता है। इसलिए जिन नर-नारियों की स्थिति इसके लिए उपयुक्त हो, उन्हें वानप्रस्थ ले लेना चाहिए। एक प्रतिज्ञा बन्धन बँध जाने पर व्यक्ति अपने जीवनक्रम को तदनुरूप ढालने में अधिक सफल होता है, बिना संस्कार कराये मनोभूमि पर वैसी छाप गहराई तक नहीं पड़ती। इसलिए कदम कभी आगे बढ़ते, कभी पीछे हटते रहते हैं। विवाह न होने तक प्रेमी का सहचरत्व सन्दिग्ध रहता है, पर जब विवाह हो गया हो, तो सब कुछ स्थायी एवं सुनियोजित हो जाता है।

संस्कार के बिना पारमार्थिक भावनाओं का तूफान कभी शिथिल या समाप्त भी हो सकता है, पर यदि विधिवत् संस्कार कराया गया, तो अन्तःकरण तथा लोकलाज दोनों ही निर्धारित गतिविधि अपनाये रहने की प्रेरणा देते रहेंगे, इसलिए शास्त्र मर्यादा के अनुरूप जिन्हें सुविधा हो, वे विधिवत् संस्कार करा लें, जिन्हें सुविधा न हो वे बिना संस्कार के भी उपयुक्त प्रकार की रीति-नीति अपनाने के लिए यथा सम्भव प्रयत्न करते रहें।

लोक शिक्षण की आवश्यकता-इस गतिविधि को अपनाने से समाज की भी भारी सेवा होती है। प्राचीनकाल में लोक निर्माण की सारी गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों के संचालन का उत्तरदायित्व साधु-ब्राह्मण, वानप्रस्थों पर ही था, वे अपनी सारी शक्तियाँ परमार्थ भावना से प्रेरित होकर जनमानस को सन्मार्ग की ओर प्रवृत्त किये रहने में लगाये रहते थे। फलस्वरूप चारों ओर धर्म, कर्त्तव्य, सदाचार का ही वातावरण बना रहता था। वयोवृद्ध अनुभवी परमार्थ-परायण लोकसेवियों का प्रभाव जन साधारण पर स्वभावतः बहुत गहरा पड़ता है। वह टिकाऊ भी होता है। ऐसे लोक जन नेतृत्त्व करने के लिए जब धर्मतंत्र का उचित उपयोग करते थे, तो सारे समाज में सत्प्रवृत्तियों के लिए उत्साह उमड़ पड़ता था। शिक्षा, स्वास्थ्य, सदाचार, न्याय, विवेक, वैभव, शासन, विज्ञान, सुरक्षा, व्यवस्था आदि सभी क्षेत्रों में वे वयोवृद्ध लोग ही नेतृत्व करते थे। इतने अधिक अनुभवी और धर्म परायण व्यक्तियों की निःशुल्क सेवा जिस देश या समाज को उपलब्ध होती हो, उसको संसार का मुकुटमणि होना ही चाहिए। प्राचीनकाल में ऐसी ही स्थिति थी। आज वानप्रस्थ परम्परा ही नष्ट हुई, बूढ़े लोगों को लोभ-मोह के बंधनों में ही ग्रसित रहना प्रिय लगा तो फिर देश का पतन अवश्यम्भावी हुआ भी, हो भी रहा है।

यज्ञोपवीत पूजन

दोनों हाथों के सम्पुट में यज्ञोपवीत को लेकर पाँच बार गायत्री मंत्र बोलते

हुए, उसमें गायत्री की प्राण-प्रतिष्ठा करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

पंच देवावाहन

निम्नांकित सूत्र दोहराकर क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु, महेश, यज्ञ और सूर्य देवता का यज्ञोपवीत में आवाहन करें। नमः के साथ यज्ञोपवीत को हाथ के सम्पुट सहित मस्तक से लगा लें।

1. ब्रह्मा हमें सृजनशीलता प्रदान करें।

ॐ ब्रह्मा सृजनशीलतां ददातु। ॐ ब्रह्मणे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

2. विष्णु हमें पोषण-क्षमता से युक्त बनायें।

ॐ विष्णुः पोषणक्षमतां ददातु। ॐ विष्णवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

3. शिव हमें अमरत्व प्रदान करें।

ॐ शिवः अमरतां ददातु। ॐ शिवाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

4. यज्ञदेव हमें सत्कर्म सिखायें।

ॐ यज्ञदेवः सत्पथे नियोजयेत्। ॐ यज्ञपुरुषाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

5. सविता हमें तेजस्वी बनायें।

ॐ सवितादेवता तेजस्वितां वर्धयेत्। ॐ सवित्रे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

यज्ञोपवीत धारण

इसके बाद मंत्रोच्चार के साथ यज्ञोपवीत धारण करें-

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

जीर्णोपवीत विसर्जन

ॐ एतावद्दिन पर्यन्तं, ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्ते परित्यागो, गच्छ सूत्र यथासुखम्।।

मेखला कोपीन धारण

कोपीन धारण करने का अर्थ है–इन्द्रिय संयम बरतना। वानप्रस्थी को संतानोत्पादन बन्द कर देना चाहिए। अब तक की उत्पन्न हुई संतान का ही पालन–पोषण, विकास–निर्माण ठीक तरह करेंगे, यही बहुत है। पचास वर्ष की आयु के बाद बच्चे पैदा करते रहना एक लज्जा की बात है, इससे कठिनाई बढ़ती है। बच्चे दुबले पैदा होते हैं, अनाथ रह जाते हैं तथा उनकी जिम्मेदारी मरते समय तक बनी रहने से समाजसेवा, परमार्थ साधना जैसे जीवन को सार्थक बनाने वाले प्रयोजनों के लिए अवसर नहीं मिलता। जिसके पीछे जितनी कम घरेलू जिम्मेदारी है, वह उतनी ही अच्छी तरह वृद्धावस्था का सदुपयोग कर सकेगा।

कमर में रस्सी बाँधना कोपीन धारण के लिए तो आवश्यक है ही साथ ही वह सैनिकों की तरह कमर, पेटी बाँधकर परमार्थ के मोर्चे पर आगे बढ़ने की मानसिक स्थिति का भी प्रतीक है। कमर कसना, मुस्तैदी, सतर्कता, तत्परता निरालस्यता जैसी शारीरिक एवं मानसिक स्थिति बनाये रखने का प्रतीक है। निर्माण के दो मोर्चे पर एक साथ लड़ने वाले सैनिक को जिस सतर्कता से कार्य करना होता है, वैसा ही उसे भी करना चाहिए।

क्रिया और भावना–कलावा या कोपीन दोनों हाथों के सम्पुट में रखकर निम्नांकित सूत्र दोहराकर अभिमंत्रित करें। भावना करें कि इनमें समय और तत्परता के संस्कार पैदा किये जा रहे हैं।

ॐ संयमशीलः तत्परश्च भविष्यामि। (संयमशील और तत्पर रहेंगे)

अब गायत्री मंत्र बोलते हुए उसे कमर में बाँधें।

धर्मदण्ड धारण

वानप्रस्थी को हाथ में लाठी दी जाती है। गुरुकुलों में विद्याध्ययन करने वालों को वन्य प्रदेश की आवश्यकता के अनुरूप लाठी सुविधा की दृष्टि से आवश्यक भी होती है। इसके अतिरिक्त यह धर्मदण्ड इस मन्तव्य का भी प्रतीक है कि राजा जिस प्रकार राज्याभिषेक के समय शासन सत्ता का प्रतीक राजदण्ड छोटा लकड़ी का डण्डा हाथ में विधिवत् समारोह के साथ ग्रहण करता है, उसी प्रकार वानप्रस्थी संसार धर्म व्यवस्था कायम रखने की अपनी जिम्मेदारी को हर घड़ी स्मरण रखे रहे और तदनुरूप अपना जीवनक्रम बनाये रहे, इसलिए भी यह धर्मदण्ड है।

दण्ड दोनों हाथों में पकड़ें। सूत्र दोहराकर दण्ड मस्तक से लगाकर अपनी दाहिनी ओर रख लें।

ॐ अनुशासनानि पालयिष्यामि।

(गुरु द्वारा निर्धारित अनुशासनों का पालन करेंगे।)

पीतवस्त्र धारण

पीतवस्त्र वीरों, त्यागियों और परमार्थ परायणों का बाना कहा जाता है। अज्ञान, अभाव एवं अनीति से संघर्ष करने के लिए विचारशीलों को संत, सुधारक और शहीदों की भूमिका निभाने की तैयारी करनी पड़ती है। संस्कृति की प्रतिष्ठा, उसके सनातक गौरव की रक्षा के लिए यही रंग प्रेरणा देता है।

क्रिया और भावना-दोनों हाथों की हथेलियाँ सीधी करके दुपट्टा लें। मंत्र के साथ ध्यान करें कि सत् शक्तियों से पवित्रता, शौर्य और त्याग का संस्कार प्राप्त कर रहे हैं। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है उसे दोहरायें-

ॐ अहन्तां उत्सृज्य विनम्रतां धारयिष्ये।

(अहन्ता को त्यागकर विनम्रता अपनाऊँगा।)

इसके बाद गायत्री मंत्र बोलते हुए पीले वस्त्र के प्रतीक रूप में पीला दुपट्टा धारण कर लें।

त्रिदेव पूजन-

ऋषि पूजन

त्रिदेव पूजन में सबसे पहले ऋषि पूजन का क्रम आता है। सांस्कृतिक चेतना को जाग्रत-जीवन्त रखने के लिए और जीवन के महत्वपूर्ण सिद्धान्तों की शोध और उनका लाभ जन-जन तक पहुँचाने एवं ईश्वरीय उद्देश्यों के लिए समर्पित पवित्र और तेजस्वी व्यक्तित्व के धनी उन महामानवों की परम्परा का अनुगमन, आत्मकल्याण लोकमंगल दोनों दृष्टियों से अनिवार्य है, उनके अनुगमन के शुभारम्भ के रूप में पूजन किया जाता है।

क्रिया और भावना-हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर ऋषियों का ध्यान कर मंत्रोच्चार के साथ भावना करें कि हम भी उन्हीं की परिपाटी के व्यक्ति हैं, उनके गौरव के अनुरूप बनने के लिए अपने पुरुषार्थ के साथ उनके अनुग्रह को जोड़ रहे हैं, उसे पाकर अन्याय उन्मूलन के मोर्चे को सुदृढ़ बनायेंगे। सूत्र दोहरायें-

ॐ सामान्यजनमिव निर्वाहं करिष्यामि।
(औसत नागरिक के स्तर के निर्वाह का अभ्यास बनाये रखूँगा।)

वेद पूजन

वेद कहते हैं ज्ञान को-अज्ञान हजार दुःखों का कारण है। ज्ञान-सद्विचार की स्थापना से ही समाज में सुख-सद्गति सम्भव है। स्वयं ज्ञान की आराधना करने तथा जन-जन को उसमें लगाने का भाव वेद पूजन के साथ रहता है।

क्रिया और भावना-पूजन सामग्री हाथ में लें। मंत्रोच्चार के साथ भावना करें कि ज्ञान की सनातन धारा के वर्तमान युग के अनुरूप प्रवाह को अपने लिए समाज के लिए पतित पावनी माँ गंगा की तरह प्रवाहित करने के लिए अपनी भूमिका निर्धारित की जा रही है।

ॐ ज्ञानक्रान्तेः अनुगमनं करिष्यामि। (विचार क्रांति का अनुगमन करूँगा।)

देव पूजन

देव शक्तियाँ कल्याणकारी प्रवृत्तियाँ पुष्ट होती हैं। यज्ञीय भावना के आधार पर ही व्यक्ति और समाज अभावों से मुक्त होगा। अन्यथा कुबेर जैसी सम्पदा प्राप्त कर लेने के बाद भी शोषण, उत्पीड़न और कंगाली का वातावरण बना रहेगा। यज्ञीय भावना, यज्ञीय दर्शन और यज्ञीय जीवन क्रम अपनाने फैलाने का संकल्प देव पूजन के साथ जुड़ा रहेगा।

क्रिया और भावना-पूजन सामग्री हाथ में लें। मंत्र के साथ भावना करें कि धर्म और देवत्व के प्रमुख आधार को अंगीकार करते हुए, उसे पुष्ट और प्रभावशाली बनाया जा रहा है।

ॐ साधना, उपासना, आराधनैः देवत्वं वर्धयिष्यामि।
(उपासना,साधना, और आराधना के सहारे देवत्व की ओर बढ़ूँगा।)
इसके बाद निम्नांकित मंत्रोच्चारण के बाद हाथ के अक्षत-पुष्प को पूजावेदी पर चढ़ा दें।
ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्स्य, बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं, यज्ञ ꣳ समिमं दधातु। विश्वे देवास ऽइह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ।

व्रत धारण

महानता की मंजिल पर मनुष्य एकाएक नहीं पहुँच जाता, उसके लिए एक-

एक करके सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती है। श्रेष्ठ प्रवृत्तियाँ, आचरण एवं स्वभाव बनाने के लिए व्रतशील होकर चलना पड़ता है। छोटे ही सही व्रत लेने उन्हें पूरा करने फिर नये व्रत लेने का क्रम विकास के लिए अनिवार्य है। व्रतशीलता के लिए कुछ देवशक्तियों को साक्षी करके व्रतशील बनने की घोषणा की जाती है। इन्हें अपना प्रेरक, निरीक्षक और नियंत्रक बनाना पड़ता है।

क्रिया और भावना–साधक मंत्रोच्चार के समय दोनों हाथ ऊपर उठाकर रखें। भावना करें कि हाथ उठाकर व्रतशीलता की साहसिक घोषणा कर रहे हैं। साथ ही सत्प्रवृत्तियों को अपना हाथ थमा रहे हैं। वे हमें मार्गदर्शक की तरह प्रेरणा एवं सहारा देती रहेंगी। एक देवता का मंत्र पूरा होने पर हाथ जोड़कर नमस्कार करें। हाथ में क्रमशः अक्षत–पुष्प लेकर व्रत धारण का सूत्र दोहराकर देवों की सक्षी में उन्हें नमन करते हुए हर बार पूजा वेदी पर चढ़ा दें।

सूत्र–ॐ आयुष्यार्थं परमार्थे नियोजयिष्ये।

(आधा जीवन परमार्थ में लगाऊँगा।)

मंत्र–ॐ अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ अग्नये नमः।

सूत्र–ॐ संयमादर्शयुतं सुसंस्कृतं व्यक्तित्वं रचयिष्ये।

(संयमी, आदर्शयुक्त एवं सुसंस्कृत व्यक्तित्व बनाऊँगा।)

मंत्र–ॐ वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ वायवे नमः।

सूत्र–ॐ युगधर्मणे सततं चरिष्यामि।

(युग धर्म के परिपालन के लिए सतत गतिशील रहूँगा।)

मंत्र–ॐ सूर्य व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ सूर्याय नमः।

सूत्र–ॐ विश्वपरिवारसदस्यः भविष्यामि।

(विशाल विश्व परिवार का सदस्य बनूँगा।)

ॐ चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ चन्द्राय नमः।

सूत्र–ॐ सत्प्रवृत्तिसंवर्धनाय दुष्प्रवृत्यन्मूलनाय पुरुषार्थं नियोजयिष्ये।

(सत्प्रवृत्ति संवर्धन और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन में अपना पुरुषार्थ नियोजित रहेगा।)

ॐ व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ इन्द्राय नमः।

प्रवज्या

परिव्राजक का काम है चलते रहना। रुके नहीं लक्ष्य की ओर बराबर चलता

रहे, एक सीमा में न बँधे, जन-जन तक अपनत्व और पुरुषार्थ को फैलाए। जो परिव्राजक लोकमंगल के लिए संर्कीणता के सीमा बन्धन तोड़कर गतिशील नहीं होता। वह पाप का भागीदार होता।

क्रिया और भावना-निरन्तर चलते रहने का व्रत ग्रहण करके, खड़े होकर हाथ जोड़े हुए अपने स्थान से देवमंच की ओर तथा अन्य गुरुजनों के समक्ष चलते हुए प्रणाम किया जाये। गुरुजन अक्षत-पुष्प की वर्षा करें। प्रतिनिधि, चरैवेति-चरैवेति, का सिद्धान्त और मंत्र बोलते जायें।

ॐ कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः।
उत्तिष्ठँस्त्रेता भवति कृतं सम्पद्यते चरन्। चरैवेति-चरैवेति।।
चरन् वै मधु विन्दति चरन् स्वादुमुदुम्बरम्। चरैवेति-चरैवेति।।

संकल्प

साधक हाथ में अक्षत-पुष्प एवं जल लेकर संकल्प करें कि अब मैं अपना या अपने परिवार का न रहकर समस्त समाज का बन गया। मेरा जीवन सार्वजनिक सम्पत्ति समझा जाए, उसे अपने या परिवार वालों के लाभ के लिए नहीं, वरन् विश्वमानस के लाभ की आवश्यकता-पूर्ति का ध्यान रखते हुए माना जाए।

संकल्प के लिए अक्षत-पुष्प एवं जल हाथ में लें। भावना करें कि देव संस्कृति के मेरुदण्ड वानप्रस्थ जीवन का शुभारम्भ करने के लिए अपने अन्तरंग और अन्तरिक्ष की सद्शक्तियों से सहयोग की विनय करते हुए साहस भरी घोषणा कर रहे हैं।

ॐ तत्सदद्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये प्रहरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्त्तैक-देशान्तर्गते.....क्षेत्रे..... विक्रमवत्सरे.....मासानां मासोत्तमेमासे.....पक्षे.....तिथौ..... वासरे.....गोत्रोत्पनः.....नामाऽहं स्वजीवनं व्यक्तिगतं न मत्वा सम्पूर्ण-समाजस्य एतत् इति ज्ञात्वा, संयम-स्वाध्याय-उपासनेषु विशेषतश्च लोकसेवियां निरन्तरं मनसा वाचा कर्मणा च संलग्नो भविष्यामि इति संकल्पं अहं करिष्ये।

7-जन्मदिवसोत्सव

जन्म दिवस हर साल मनाओ, क्या-क्या किया हिसाब लगाओ।
जन्म दिवस पर दुर्गुण छोड़ो, साथ एक सद्गुण भी जोड़ो॥

* जीवन लक्ष्य के चिंतन-मनन का शुभ दिन।
* आत्म निर्माण (आत्म निरीक्षण, आत्म समीक्षा, आत्म निर्माण, आत्म विकास) की दिशा में संकल्पित होने का पर्व।
* सावधान जीवन का नन्हा क्षण भी निरर्थक न बीत जाए-

चौपाई-बड़े भाग मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ सद्ग्रंथ हिं गावा।
जन्मोत्सव करता सदा जीवन का संस्कार।
जैसे दीपावली पर, हानि-लाभ का सार॥
जन्मोत्सव पर त्यागते गत जीवन की भूल।
अगले जीवन के लिए व्रत लेते अनुकूल॥

भूमिका-जिन परिजनों का आज जन्मदिन है, उनके लिए यह परम सौभाग्य का दिन है। यही एक ऐसा संस्कार है जिसे हर इन्सान को प्रति वर्ष मनाने का अवसर मिलता है। यों तो व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रेरणादायी प्रसंग पर्व-त्यौहार, संस्कार आदि आते और मनाए जाते हैं। पर व्यक्तिगत दृष्टि से मनुष्य का अपना जन्मदिन उसके लिए सबसे बड़े, हर्ष, गौरव एवं सौभाग्य का दिन हो सकता है। भगवान श्रीराम का जन्मदिन **राम नवमी**, भगवान श्रीकृष्ण का जन्मदिन **जन्माष्टमी** जितना महत्त्वपूर्ण है, उतना ही किसी सामान्य व्यक्ति के जीवन में उसका जन्मदिन किसी भी प्रकार कम आनन्द एवं उल्लास का नहीं होता। यदि उसे गम्भीरता पूर्वक आत्मावलोकन करते हुए, प्रेरणादायी वातावरण में शुभ संकल्प के साथ मनाया जाय तो नर से नारायण बनने का पथ प्रशस्त हो जाए।

आज के ही दिन-'**ईश्वर अंश जीव अविनाशी, चेतन अमल सहज सुख राशी**' के रूप में मानव तन धारण कर आपका इस धरा धाम पर अवतरण हुआ था। उस पुण्य घड़ी को सदा याद रखना है। परम पिता परमेश्वर ने अपने

उत्तराधिकारी के रूप में आपको यहाँ भेजा है। सर्व समर्थ सत्ता की सारी विभूतियाँ आप के अन्दर बीज रूप में विद्यमान है। बीज गलकर भी मिटता नहीं है, अजर-अमर हो जाता है। जिस प्रकार बरगद के बीज में विशाल बटवृक्ष छिपा होता है, उसी प्रकार आपके अन्दर ही महानता के बीज (महात्मा बुद्ध, गाँधी, विवेकानन्द, लक्ष्मीबाई, मीराबाई, सिस्टर निवेदिता, संघमित्रा आदि) छिपे बैठे हैं।

मानव तन पाकर हमें भी कुछ वैसा ही करना है। आज आप का जन्मदिन इस दिव्य वातावरण में मनाया जा रहा है। युगपुरुष पूज्य गुरुदेव के पावन सानिध्य में हो रहा यह धर्मानुष्ठान, आपके अन्तर्मन में एक ऐसा ही संकल्प जागृत करे। ऋषियुग्म के अवतरण से यह धरा धन्य हो गई। आप सब भी उन्हीं के मानस पुत्र व पुत्रियाँ हैं। गंभीरता पूर्वक विचार करें। अबतक के जीवन का, शुभ-अशुभ कर्मों का सूक्ष्मता से अवलोकन करें। मानव जीवन को सार्थक बनाने का निरन्तर प्रयास करते रहना है। आत्म चिन्तन, आत्मसमीक्षा करें। कमजोरियों से जूझना है। उस पर विजय प्राप्त करते हुए आगे कदम बढ़ाते चलना है। हर जन्मदिन यही संदेश लेकर आता है। सोचें, विचारें, अबतक क्या करते रहे हैं ? मानव जीवन की गरिमा का कितना ध्यान रखे हैं ? क्या कुछ भूलें हुई हैं ? अच्छाईयाँ बढ़ाते चलना है। बुराइयों को दूर करते चलना है। इसी में मानव जीवन की सार्थकता है।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए आईए अब यहाँ से जन्मदिन संस्कार प्रारंभ करें।

पंच तत्व पूजन

हमारा शरीर-पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश, इन पाँच तत्वों के सहयोग से बना है। इनके पूजन का भाव है- इनके प्रति कृतज्ञता या सम्मान का भाव रखना। भावना करें-

1. पृथ्वी माता हमें उर्वरता और सहनशीलता दें।
2. वरुण देवता हमें शीतलता और सरसता दें।

3. वायुदेवता हमें गतिशीलता और जीवनी शक्ति प्रदान करें।
4. अग्नि देवता हमें तेजस् और वर्चस् प्रदान करें।
5. आकाश देवता हमें उदात्त और महान् बनायें।

इसी प्रेरणा के साथ हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहराएँ-

ॐ श्रेयसां पथे चरिष्यामि। (जीवन को कल्याणकारी मार्ग पर चलायेंगे।)

अब मंत्र के साथ अक्षत-पुष्प सामने पात्र में अर्पित कर दें। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य, बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं,
यज्ञ ँ समिमंदधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ।

दीप पूजन

दीपक को ज्ञान, चेतना, प्रकाश का प्रतीक माना जाता है।

1. दीपक की तरह हमें अखण्ड पात्रता प्राप्त हो।
2. हमें अक्षय स्नेह की प्राप्ति हो।
3. हमारी निष्ठा ऊर्ध्वमुखी हो।
4. हम भी दीपक जैसा बनें।

इसी भाव से गायत्री मंत्र बोलते हुए दीप प्रज्वलित करें। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

अब हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दोहराएँ-

ॐ परमार्थमेव स्वार्थं मनिष्ये। (परमार्थ को ही स्वार्थ मानेंगे।)

ज्योति वन्दन

अब ज्योति को नमन-वन्दन करें।

1. अग्नि ही ज्योति है, ज्योति ही अग्नि है।
2. सूर्य ही ज्योति है, ज्योति ही सूर्य है।
3. सूर्य ही वर्चस् है, ज्योति ही वर्चस् है।

जड़ चेतन सबमें वही है। हम सबके अंदर भी वही ज्योति विद्यमान है। इसी

भाव से अक्षत-पुष्प लेकर ज्योति का पूजन करें। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। सूर्योवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।

व्रत धारण

इसके साथ अपने जीवन को ऊँचा उठाने-अच्छा बनाने का एक व्रत लिया जाता है। कोई एक बुराई छोड़ने का तथा कोई एक अच्छाई अपनाने का व्रत लें। उम्र के अनुसार जो बड़े हैं अपने अन्दर झाँकें, कौन सी बुराई है जो हमारी सुख-शान्ति, और प्रगति में बाधक है, उसे छोड़ने का साहस करें। नौजवान भाई-बहिन गलत संगत से बचें। महान पुरुषों का अनुगमन करें। छोटे बच्चे बच्चियाँ भी गलत खान-पान, गलत संगत से बचें। अच्छी किताबें पढ़ें। सभी परिजन साधना, स्वाध्याय, संयम, सेवा का व्रत पालन करें। व्यस्त रहें, मस्त रहें। सादाजीवन उच्च विचार बनाएँ। अपने प्रति कठोर रहें, दूसरों के प्रति उदारता वरतें। महानता का वरण करें। अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहराएँ-

ॐ महत्त्वाकांक्षां सीमितं विधास्यामि।

(हम महत्त्वाकांक्षाओं को संयमित रखेंगे।)

अब अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र आदि को साक्षी मानकर अपने व्रत की घोषणा करें। संकल्प की सफलता के लिए देव शक्तियों को नमः शब्द के साथ शीश झुकाकर दोनों हाथ जोड़कर नमन करते चलें। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है-

ॐ अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ अग्नये नमः।
ॐ वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ वायवे नमः।
ॐ सूर्य व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ सूर्याय नमः।
ॐ चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ चन्द्राय नमः।
ॐ व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ इन्द्राय नमः।

संकल्प

अब तक जो कुछ भी कहा गया, आपने उसे ध्यान पूर्वक सुना। उसकी सफलता इसी में है कि उसे पूरा करने का आश्वासन आप देव शक्तियों को दें।

नित्य स्वाध्याय, चिन्तन, मनन करें। गुण, कर्म और स्वभाव को मानव, देवमानव, ऋषियों जैसा बनाने का संकल्प लें। हाथ में अक्षत पुष्प और जल ले लें। संकल्प सूत्र यहाँ से बोले जा रहे हैं, उन्हें दुहराएँ-

संकल्प मंत्र-

अद्य...गोत्रोत्पन्नः.....नामाहं.....जन्मदिवसोत्सव संस्कार सिद्धयर्थं देवानां तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणांतर्गते-श्रेयसां पथे चरिष्यामि, परमार्थमेव स्वार्थं मनिष्ये, महत्त्वकांक्षां सीमितं विधास्यामि-इत्येषां व्रतानां धारणार्थं, संकल्पं अहं करिष्ये।

आशीर्वचन

समीप में बैठे सभी परिजन हाथ में अक्षत-पुष्प ले लें। जिनका जन्म दिन है वे हाथ जोड़ें, आखें बन्दकर बैठे रहें। उपस्थित परिजन मंत्र के साथ उनको आशीर्वाद दें। उज्ज्वल भविष्य की कामना करें। पूज्य गुरुदेव, वन्दनीया माताजी, गायत्री माता, यज्ञ भगवान का आशीर्वाद इन पर सदैव बरसता रहे। वे आत्म परिष्कार के साथ-साथ नव सृजन के काम में सतत् संलग्न रहें-परम सत्ता उन्हें ऐसी शक्ति दें। इसी भाव से उन पर पुष्प वर्षा करें।

ॐ मङ्गलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुडध्वजः।
मङ्गल पुण्डरीकाक्षो, मङ्गलायतनो हरिः।।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

जन्म दिवस संस्कार से संबंधित पूजन सामाग्री-

1. चावल की पाँच ढेरी (काला, लाल, हरा, पीला, सफेद) पंचतत्त्व पूजन हेतु।
2. दीपदान हेतु दीपक। (जितने वर्ष हो उतने दीपक तथा एक बड़ा दीपक)।
3. दीपक जलाने के लिए मोमबत्ती एवं माचिस।
4. अक्षत, फूल, रोली, कलावा, कर्पूर, नेवैद्य, ऋतुफल आदि।

8-विवाह दिवसोत्सव

तब विवाह का करो विचार, तन, मन, धन से हो तैयार।
विवाह दो आत्माओं का मेल, नहीं गुड्डा-गुडियों का खेल॥
खर्चीली शादी बरबादी, गरीब और बेईमान बनाती।
बिन दहेज के ब्याह रचाओ, इस राक्षस को मार भगाओ॥

छन्द- बर कुंअरि करतल जोरि साखो चारू दोऊ कुल गुरु करै।
भयो पानि गहनु बिलोकि बिधि सुर मनुज मुनि आनँद भरैं॥
सुख मूल इलहि देखि दम्पति लुलक तन हुलस्यो हियो।
करि लोक बेद बिधानु कन्यादानु नृप भूषन कियो॥

भाँवर एवं सिन्दूर दान

चौपाई-प्रमुदित मुनिन्ह भाँवरी फेरी। नेग सहित सब रीति निबेंरी।
राम सीय सिर सेन्दूर देहीं। शोभा कहिन जाति बिधि केही॥
बहुरि बशिष्ठ दीन्हि अनुशासन। बरु दुलहिनि बैठे एक आसन॥

भूमिका-

विशिष्ट वहनं इति विवाह-विशिष्टता विशिष्ट उत्तरदायित्वों को धारण करने का नाम विवाह संस्कार। नर-नारी द्वारा एक-दूसरे के प्रति अपनी विशिष्टताओं का समर्पण। दो आत्माओं का पवित्र मिलन। एक सम्मिलित नवीन इकाई का निर्माण। एक नये परिवार, नये समाज, नये राष्ट्र का निर्माण। परिवार एक छोटा राष्ट्र, राष्ट्र एक बड़ा परिवार। आदर्श समाज की स्थापना का मूल आधार।

विवाह मात्र एक सामाजिक समझौता नहीं, अपितु जन्म-जन्मान्तरों तक साथ निभाने का शपथ समारोह। शक्तियों, यज्ञाग्नि, संबंधियों, इष्ट मित्रों की साक्षी में सात परिक्रमाओं, सात कदमों के माध्यम से लिए संकल्प ही गृहस्थ जीवन का आधार।

चतुर्णामाश्रमाणाञ्च गृहस्थ विशिष्यते-चारों ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास आश्रमों में गृहस्थ आश्रम ही सर्वश्रेष्ठ। गृहस्थ ही यज्ञ और तप का आधार। विवाह शारीरिक सौंदर्य और धन की अपेक्षा गुण, कर्म और स्वभाव की उत्कृष्टता अधिक महत्वपूर्ण। अहंकार पूर्ण धन का प्रदर्शन, धूमधाम से भरपूर समारोह नहीं, अपितु यज्ञीय वातावरण में सम्पन्न संस्कार ही सराहनीय। वर सत्कार अर्थात्

श्रेष्ठता ही सम्मानीय। वर माला का अर्थ जीवन साथ के वरण चुनाव की स्वीकृति। कन्यादान अर्थात कन्या के प्रति उत्तरदायत्विों का हस्तान्तरण। यज्ञाग्नि की परिक्रमा अर्थात् यज्ञीय अनुशासन में ही भावी जीवन की गतिविधियों का निर्धारण। गृहस्थ एक तपोवन है, जिसमें संयम, सेवा और सहिष्णुता की साधना करनी पड़ती है।

–परमपूज्य गुरुदेव

दो आत्मा की एकता है विवाह संस्कार।
धन्धा नहीं दहेज का, जीवन भर सहकार॥
सद्गृहस्थ के निमय का करें सदा सम्मान।
और राष्ट्र को दे सकें, श्रेष्ठ-गुणी संतान॥

विवाह दो आत्माओं का पवित्र बंधन है। दोनों प्राणी अपने अलग-अलग अस्तित्व को समाप्त कर एक सम्मिलित इकाई का निर्माण करते हैं। इसी से समग्र व्यक्तित्व का निर्माण होता है। दाम्पत्य जीवन में पति और पत्नी दोनों को आपस में एक-दूसरे के प्रति समर्पण विश्वास की भावना रखनी चाहिए। तभी दाम्पत्य जीवन सफल हो सकता है। एकाकी मनुष्य अपूर्ण है। पति-पत्नी दोनों के संबंध से एक अपनी कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जो दूसरे में नहीं। इन दोनों के समन्वय से वे अभाव दूर होते हैं। जिनके कारण मानसिक शांति और सांसारिक सुख-सुविधाओं का द्वार रुका पड़ा रहता है।

दो आँख, दो कान, दो हाथ, दो पैर की तरह मनुष्य जीवन भी गाड़ी के दो पहियों की तरह मानव जीवन पति-पत्नी के दो आधारों पर चलता है। दो अंगो में विभक्त है। दोनों से मिलकर शरीर शोभा पाता है। अन्यथा एकाकी पन काने, लँगेड़े ,लूले व्यक्ति की तरह कुरूप बनकर रह जाता है।

बन्दूक एवं मोटर गाड़ी के लाइसेन्स को हर साल नवीनीकरण कराना पड़ता है। ठीक उसी प्रकार विवाह के कर्त्तव्यों को ठीक तरह पालन करने के लिए और भूल-चूक को सुधारने के लिए विवाह लाइसेन्स का यदि हर वर्ष नवीनीकरण कराया जाय तो इसमें कुछ हानि ही नहीं होगी। हर दृष्टि से लाभ ही लाभ होता हुआ चला जायेगा। जब पति-पत्नी आपस में घुलमिल कर रहते हैं तो घर स्वर्ग नजर आता है। चारों ओर आनन्द ही आनन्द संव्याप्त होता है, परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी विषम क्यों न हो। हर परिस्थति में दोनों को आपस में ताल-मेल बिठाना चाहिए तभी

दामपत्य जीवन सार्थक होगा।

कहानी–मेरी और टामस का दाम्पत्य जीवन अनंत प्रेम से भरा–पूरा था। हर वर्ष विवाह दिवस मनाते और छोटा–मोटा उपहार उस दिन एक–दूसरे को भेट करते थे। गरीबी में भी आनन्दपूर्ण जीवन बिता रहे थे। उस वर्ष विवाह का दिन फिर आया। दोनों एक–दूसरे के लिए उपहार देने की योजना बनाने लगे, पर जेबे बिल्कुल खाली थी। टामस ने पत्नी के सुनहरे बालों में लगाने के लिए एक सुनहरी क्लिप खरीदने की बात सोची। मेरी सोचने लगी कि पति के हाथ घड़ी के लिए सुनहरी चैन खरीदी जाय। ये भाव दोनों के मन में थे। साधन जुट नहीं रहा था। दिन निकट आ गया। टामस पुरानी घड़ी बेचकर बदले में सुनहरी क्लिप खरीद लाया। मन में बहुत प्रसन्नता थी मेरी क्या करती ? वह घुँघराले बाल कटवाकर मिले पैसों से घड़ी की चैन खरीद लाई सिर पर टोपा लगा लिया।

विवाह दिन आया, उपहार देने के लिए एक ने दूसरे के तरफ हाथ बढ़ाया। क्लिप कहाँ लगे बाल नदारद, चैन कहाँ बाँधें, घड़ी गायब। पूछने पर भेद खुला शोभित न होने पर भी इन उपहारों ने एक–दूसरे का दिल सदा–सदा के लिए जीत लिया। दोनों की आँखों में प्रेम के आँसू थे ऐसी होती है आत्मीयता। गरीब होकर भी प्रेम, सहकार से भरापूरा दाम्पत्य जीवन हम समझ नहीं पाते। दाम्पत्य जीवन कैसे होना चाहिए। दाम्पत्य जीवन में दोनों के प्रति आत्मीयता, प्रेम सहकार से होना चाहिए। आप लोगों का दाम्पत्य जीवन भी ऐसा ही हो। आज तो धन होकर भी लोग नरकीय जीवन जी रहे हैं।

ग्रंथिबन्धन

पाणि ग्रहण के बाद समाज द्वारा दोनों को एक गाँठ मे बाँध दिया जाता है। दुपट्टे का छोर बाँधने का अर्थ है दोनों के शरीर और मन से एक नई सत्ता का उदय होना अर्थात–दोनों एक–दूसरे से बंधे रहे। जिस प्रकार दूध और पानी आपस में मिल जाते हैं, उसी प्रकार दो शरीर और एक प्राण होकर रहना चाहिए। इसमें पुष्प, अक्षत, दुर्वा, हल्दी की गाँठ और पैसा बाँधा जाता है।

पुष्प– पुष्प के समान सदा प्रफ्फुलित एवं सुगन्धित रहें।

अक्षत– अक्षत अटूट निष्ठा का प्रतीक है, एक–दूसरे के प्रति निष्ठावान बनें रहें।

दुर्वा– यह प्रत्येक मौसम में हरा–भरा रहता है। उसी प्रकार हमारा जीवन भी

प्रत्येक वर्ष हर परिस्थतियों में हराभरा रहे।

हल्दी- हल्दी आरोग्य का प्रतीक है, मंगलकारी होती है।

पैसा- घर में संतुलित बनाना। पैसे पर किसी एक का अधिकार न होकर दोनों का समान अधिकार होना। फिजूल खर्च नहीं होना चाहिए।

क्रियापक्ष-पति-पत्नी हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें।

ॐ द्विशरीरं एक प्राणं भविष्यामि। (हम दो शरीर एक प्राण होकर रहेंगे)

इसके बाद इन पाँचों वस्तुओं को पति-पत्नि के दुपट्टे में कोई बुजुर्ग (परिजन) ग्रंथिबन्धन की क्रिया सम्पन करें। सभी लोग गायत्री मंत्र बोलें।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

पाणिग्रहण

चौपाई-पानी ग्रहण जब कीन्ह महेषा। हियँ हरसे तब सकल सुरेशा॥
बेदमंत्र मुनिबर उच्चरहीं। जय-जय-जय शंकर सुर करहि॥
बरु बिलोकि दंपति अनुरागे। पायँ पुनीत पखारन लागे॥
करेहु सदा शंकर पद पूजा। नारि धरमु पतिदेउ न दूजा॥
सास ससुर गुरु सेवा करेहू। पति रूख लखि आयुस अनुसरेहू॥
अति सनेह बस सखि सयानी। नारि धरम सिखवहि मृदुबानी॥

पाणि-अर्थात्-हाथ, ग्रहण-अर्थात्-स्वीकार करना है। दोनों एक-दूसरे से हाथ मिलायें। दोनों मित्र के समान रहेंगे। साथ जियेंगे साथ मरेंगे एक-दूसरे का समान करें।

क्रियापक्ष-दोनों अपने हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दोहरायें।

ॐ परस्परं स भविष्यामि। (एक-दूसरे को सम्मान देंगे और सुयोग्य बनायेंगे)

अगर माला लायें हों तो एक-दूसरे को पहनायें।

ॐ मंगलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुडध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्षो, मंगलायतनो हरिः।।

प्रतिक्षा

अपनी पिछली बुराइयों को छोड़ने और दाम्पत्य जीवन जीने के लिए संकल्पित होते हुए यह प्रतिज्ञा पत्र पढ़ें।

सप्तपदी

इसमें चावल या पुष्प की सात लाइन बनी है। सात बार दोनों कदम से कदम मिलाकर फौजी सैनिकों की तरह आगे बढ़ेंगें।

क्रियापक्ष–इसके पहले हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर लेकर सूत्र दुहरायें।

ॐ कुटुंबं आदर्शं विधास्यामि। (परिवार के वातावरण को आदर्शमय बनायेंगे)

अब हाथ जोड़कर खड़े हो जाएँ। मंत्र के साथ चावलों के ढेरियों पर क्रमशः दोनों एक साथ कदम बढ़ायें।

1. प्रथम कदम–(दायाँ) अन्न वृद्धि के लिए घर परिवार के सभी लोगों को ध्यान में रखते हुए सुसंस्कारी अन्न की व्यवस्था करेंगे।

ॐ परमात्मने नमः।

2. दूसरा कदम–(बायाँ) बलवृद्धि के लिए रोज शारीरिक परिश्रम उपासना साधना स्वाध्याय का क्रम बनायेंगे। कमजोर नहीं सशक्त बनकर रहेंगे। एक–दूसरे को सशक्त बनायेंगे।

ॐ जीवनब्रह्माभ्यां नमः।

3. तीसरा कदम–(दायाँ) धनवृद्धि के लिए धन के उत्पादन के साथ उसके सदुपयोग की व्यवस्था बनायेंगे। फिजूल खर्च नहीं करेंगे।

ॐ त्रिगुणेभ्यो नमः।

4. चौथा कदम–(बायाँ) सुख वृद्धि के लिए घर में मनोरंजन का वातावरण बनायेंगे, जिसमें परिवार को सुख प्राप्त हो।

ॐ चतुर्वेदेभ्यो नमः।

5. पाँचवा कदम–(दायाँ) प्रजापालन के लिए छोटे बड़े सभी के साथ अच्छे व्यवहार रखेंगे।

ॐ पंचप्राणेभ्यो नमः।

6. छठवाँ कदम–(बायाँ) ऋतु अनुसार व्यवहार के लिए दोनों एक–दूसरे के मूड देखकर ही व्यवहार करेंगे। अगर एक गुस्से में है तो दूसरे शांत होकर रहेंगे।

ॐ षडश्सेभ्यो नमः।

7. सातवा कदम–(दायाँ) मित्रता वृद्धि के लिए। दोनों में कोई भूल कर रहा है तो एक का कर्त्तव्य बनता है कि वह उसको आपस में प्यार से समझाये, ताकि वह अपनी

भूल समझे और उसे सुधारने का प्रयास करे। किसी के भी सामने एक-दूसरे का अपमान न करें।

ॐ सप्तऋषिभ्यो नमः।

आश्वात्सना

पति-पत्नि एक-दूसरे के कंधे पर हाथ रखकर आश्वात्सना देते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि वे आजीवन एक-दूसरे के प्रति ईमानदारी, निष्ठावान रहेंगे। एक-दूसरे पर अधिकार करने की अपेक्षा अपने कर्त्तव्य का पालन रखेंगे। प्यार सहकार से अपनी जीवन रूपी गाड़ी को निर्विघ्न चलाते रहेंगे।

क्रियापक्ष-पति-पत्नि दोनों एक-दूसरे के कंधे पर दाहिना हाथ रखें। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

ॐ अधिकारापेक्षया कर्त्तव्यं प्रधानं मनिष्ये।

(कर्त्तव्यों को महत्व देंगे-अधिकारों का उपेक्षा करेंगे)

तिलक

तिलक श्रेष्ठ को किया जाता है। माँग भरना-अर्थात-माँग पूरी करना लड़का माँग भरता है न कि लड़की। इसका एक ही उद्देश्य है कि पत्नी आज से जो माँग करेगी हम उसकी पूर्ति करेंगे। लेकिन यह उल्टा हो रहा है, लड़के ही माँग करने लगे हैं। गाड़ी चाहिए, टीवी चाहिए, पैसा चाहिए आदि।

क्रियापक्ष-पति-पत्नि एक-दूसरे के माथे पर तिलक लगायें। भावना करें एक-दूसरे के सम्मान और गौरव के कारण बनेंगे। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

ॐ स्वस्ति न ऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः, स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः, स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु॥

संकल्प

आज आपने विवाह दिवस के शुभ अवसर पर परम पूज्य गुरुदेव वन्दनीया माताजी के सूक्ष्म उपस्थिति में अपने परिवार को आदर्श बनाने का, एक बनकर रहने का और कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुए जीवन भर दोषों से बचे रहने का संकल्प ले रहे हैं। भगवान उन सभी संकल्पों को पूरा करें । ऐसा भाव करते हुए हाथ में पुष्प ले। हमारे साथ संकल्प सूत्र दुहरायें।

ॐ अद्य.....गोत्रोत्पनः.....नामाहं विवाह दिवसोत्सव संस्कार सिद्धयर्थं देवानां तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणान्तगर्ते द्विशरीरं एकप्राणं भविष्यामि, परस्पर सम्भावयिष्यामि, कुटम्बं आदर्शं विधास्यामि, अधिकारापेक्षया कर्त्तव्यं प्रधानं मनिष्ये इत्येषां व्रतानां धारणार्थं संकल्प अहं करिष्ये।

आशीर्वचन

अब सभी परिजन एवं प्रतिनिधि हाथ में अक्षत-पुष्प लें। जिनका विवाह दिवस है वे हाथ जोड़े, आँखें बन्द करके बैठे रहें। उपस्थित परिजन मंत्र के साथ उनको आशीर्वाद दें। उज्जवल भविष्य की कामना करें। पूज्य गुरुदेव, परम वन्दनीया माताजी का आशीर्वाद इन पर सदैव बरसता रहे वे आत्म परिष्कार के साथ-साथ नवसृजन के काम में सतत् संलग्न रहें-परम सत्ता उन्हें ऐसी शक्ति दे। इसी भाव से उन पर पुष्प वर्षा करें।

ॐ मंगलम् भगवान् विष्णुः मंगलम् गरूडध्वजः।
मंगलम् पुण्डरीकाक्षो, मंगलाय तनो हरिः ॥

ॐॐॐॐॐ

विवाह संस्कार से संबंधित पूजन सामाग्री-

1. वर सत्कार के लिए जल, कुश, मधुपर्क। 2. यज्ञोपवीत पीला रंगा हुआ
3. विवाह घोषणा के लिए वर व वधु पक्ष की जानकारी नाम व गोत्र एवं स्थान के साथ। 4. वस्त्रोपहार तथा पुष्पोपहार के लिए वस्त्र एवं मालाएँ
5. कन्यादान हेतु हल्दी, गुप्तदान के लिए आटा गुँथा हुआ।
6. गंथिबंधन के लिए हल्दी की गाँठ, पुष्प, दूर्वा और द्रव्य।
7. पत्थर की शिला, लाजा होम के लिए खील (लाई)/धान।
8. पाद प्रक्षालन के लिए परात या थाली,
9. आशीर्वाद के लिए पुष्प एवं मालाएँ/ सिंदूर।

अंत्येष्ठि संस्कार

अन्त्य+इष्टि=अन्त्येष्टि। यज्ञीय प्रक्रिया से प्राप्त जीवन का शरीर का यज्ञीय प्रक्रिया में विसर्जन। जीवन की पूर्णता यज्ञ से ही संभव। प्रकृति द्वारा पंचतत्व द्वारा शरीर को पंचतत्त्व में विलय। खाली हाथ आना, खाली हाथ जाना। मनुष्य के साथ उसका सत्कर्म-पुण्यकर्म ही जाता है। युग-युग तक जग याद करे, तुम ऐसाकर्म करो। कर्म में ऐसे मर्म भरो। जीवन की अगली यात्रा के लिए शक्ति और प्रेरणा प्रदान करना।

पंचभूत से प्राण का निष्कासन है मृत्यु।
यह परिवर्तन की तरह है साधारण कृत्य॥
मुट्ठी भर ही भस्म है, इस तन का परिणाम।
श्रेष्ठ योनि देते हमें किये गये शुभ काम॥

मरणोत्तर संस्कार-

'मृतक भोज' से कोई न तरता, 'कर्मफल' भोगना पड़ता।
मृतक भोज का खर्च बचाओ, जन सेवा में उसे लगाओ॥
'ब्रह्मभोज' का लाभ उठाओ, सद्विचार घर-घर पहुँचाओ।
भोजन कराना 'श्राद्ध' नहीं है, श्रद्धा यही है॥

बालि की मृत्यु पर श्री राम जी सुग्रीव से सारे कृत्य करवाये-

चौपाई-तब सुग्रीवहिं आयुस दीन्ह। मृतक कर्म बिधिवत सब कीन्हा॥

श्री दशरथ जी के देहावसन पर भरत जी द्वारा-

चौपाई-एहि बिधि दाह क्रिया सब कीन्हीं। बिधिवत न्हाई तिलाञ्जुलि दीन्हीं॥

चित्रकुट में श्रीराम जी द्वारा पिताजी का श्राद्ध कर्म-

चौपाई-करि पितु क्रिया बेद जसि बरनी। भे पुनीत पातक तम तरनी॥

श्रीराम चन्द्रजी द्वारा भक्त जटायु गिद्धराज की अन्त्येष्ठि-

दोहा- अबिरल भगति मांग बर, गीध गयो हरि धाम।
तेहि की क्रिया जथोचित, निज कर कीन्ही राम॥

रावण के मृत्यु पर श्रीराम आज्ञा से विभिषण द्वारा–

चौपाई–कीन्ही क्रिया प्रभु आयुस मानी। बिधिवत देशकाल जियँ जानी॥
पित हित भरत कीन्हि जसि करनी। सो मुख लाख जाइ नहिं बरनी॥

मृत्यु के बाद भी जीवन का जीवात्मा का अस्तित्व। मृतात्मा की शांति, सद्गति, तृप्ति, तुष्टि के लिए तर्पण। **श्रद्धा दीयते श्राद्धः। तृप्तते अनेन इति तर्पण।** पितरों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करना। उनके कार्यों को आगे बढ़ाना। लोकहितकारी से उन्हें प्रसन्न करना।

नहीं कर्मफल से बचा राव–रंक विद्वान।
श्रद्धा सेवा बड़ों की श्राद्ध सुकर्म महान॥
छोड़ी सम्पति आ सके यदि समाज के काम।
यह ही सच्चा श्राद्ध है अमर रहेगा नाम॥

ॐॐॐॐॐ

गायत्री यज्ञ से संबंधित पूजन सामग्री

पूजन सामाग्री का विवरण–

1. गायत्री माता का चित्र या अन्य देव प्रतिमाएँ जो भी उपलब्ध हों
2. प्रमिाएँ रखने के लिए चौकी
3. चौकी पर बिछाने हेतु नया साफ आसन
4. मिट्टी या धातु का कलश जिसमें स्वच्छ जल भरा हो
5. कलश के ऊपर रखने के लिए नारियल एवं आम या अशोक के पत्ते
6. चौकी पर रखने के लिए एक दीपक जो पूजन होने तक जले
7. अगरबत्ती या धूप बत्तियाँ स्टैण्ड सहित
8. यज्ञ के प्रसाद हेतु मिष्ठान/फल/बताशा आदि
9. रंगोली बनाने हेतु आटा, हल्दी या रंग
10. पंखा–अग्नि को प्रज्ज्वलित करने हेतु
11. यज्ञ के लिए समिधाएँ
12. कर्पूर
13. पुष्प एवं माला
14. अक्षत (चावल)
15. रोली या चंदन
16. कलावा
17. सुपारी
18. पान के पत्ते
19. यज्ञोपवीत
20. नारियल का गोला
21. माचिस,
22. घी
23. हवन सामाग्री
24. रुई
25. थाली
26. प्लेट
27. चम्मच
28. चाकू
29. हवन कुण्ड

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड) 249411 फोनः- 01334- 260602, फैक्सः-260866
Email : shantikunj@awgp.org Website : www.awgp.org